बलवान बाढड़ा, रमेश कुमार इत्यादि मौजूद रहे। (संस)

जागरण, चरखी दादरी 29.9.21

एक महान क्रांतिकारी थे सरदार भगत सिह : अमरदीप

चरखी दादरी : आजादी के अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में शहीद भगत सिंह की 114 वीं जयंती पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। राजकुमार वर्मा, डा. अमरदीप, पवन कुमार ने कालेज परिसर में पौधारोपण भी किया गया। सेमीनार के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि भगत सिंह एक महान क्रांतिकारी थे, जिन्होंने अंग्रेजों को चेताया था कि तुम मुझे मार सकते हो, पर मेरे विचारों को नहीं। प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि भगत सिंह ने संघर्ष एवं आंदोलन की नई मिसाल रखी और अंग्रेजी हुकूमत के जुल्म सबके सामने लाकर रख दिए। सेमिनार में सवीन, जितेन्द्र, पवन कुमार, अजय सिंह इत्यादि ने भी अपने विचार रखे। (जासं)

.

द मांढ़ी, प्रकाश, करतार, किशन आदि मौजूद थे।

लाख रुपये के प्रोजेक्ट पर अधिकतम 300 लाख रुपये प्रति परियोजना की अनुदान राशि उपलब्ध करवाई जा रही है। संवाद

चरखी दादरी अमर उजाला 29.9.21

'भगत ने युवाओं के लिए छोड़ा अमर संदेश'

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में शहीद भगत सिंह की 114 वीं जयंती पर विशेष सेमिनार करवाया गया। इस मौके पर प्राचार्य राजकुमार वर्मा, डॉ. अमरदीप और पवन कुमार ने पौधरोपण भी किया।

इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि भगत सिंह ने अपने प्राणों की आहुति देकर भारतीय युवाओं के लिए एक अमर संदेश छोड़ा। सेमिनार में सवीन, जितेंद्र, पवन कुमार, अजय सिंह आदि उपस्थित रहे।

पौधरोपण करते स्टाफ सदस्य। विज्ञप्ति

युवाओं ने भगत सिंह को किया नमन

चरखी दादरी। शहीद भगत सिंह की जयंती पर गांव लोहरवाड़ा के शहीद भगत सिंह युवा संगठन ने उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। प्रधान प्रवीण फौगाट की अगुवाई में युवाओं ने भगत सिंह के चित्र के समक्ष पुष्प अर्पित किए। संवाद

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 29-09-2021

शहीद भगत सिंह की 114वीं जयंती मनाई

चरखी दादरी। गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर क्रांतिकारी एवं शहीद ए आजम भगत सिंह की 114वीं जयंती पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राजकुमार वर्मा, डॉ. अमरदीप और पवन कुमार द्वारा पौधारोपण भी किया गया। सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि भगत सिंह एक महान क्रांतिकारी थे। इस विशेष सेमिनार में सवीन, जितेन्द्र, पवन कुमार, अजय सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

30. Dr. Amardeep worked as Convener and organised National Seminar on the 152nd Birth Anniversary of Great Freddom Fighter Mahatma Gandhi on 01.10.2021 and Invited Dr. Vikram Amrawat, Asst. Professor in History, Dept. of History & Culture, Gujarat Vidyapith, Ahmedabad.

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 02-10-2021

सेमीनार में गांधी व भगत सिंह को महान विचारक बताया

चरखी दादरी| गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय इतिहास विभाग के तत्वावधान में महात्मा गांधी की 152वीं जयंती पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि आजकल इतिहास के विषयों को विशेषकर महात्मा गांधी और भगत सिंह के विचारों के अध्ययन की बजाय उनको लेकर इतिहास के नाम पर विभिन्न भ्रांतियां चल रही है। इनका निवारण अनिवार्य है।

महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नई दिशा दी जबकि भगत सिंह ने इस संग्राम को नई गति एवं धार दी, जिससे अंग्रेज घबरा गये थे। इस सेमिनार के मुख्य वक्ता डॉ. विक्रम सिंह अमरावत थे। डॉ. अमरावत ने कहा कि महात्मा गांधी और भगतसिंह दोनों ही महान विचारक थे। प्राचार्य एवं सेमिनार के अध्यक्ष राजकुमार वर्मा ने कहा कि महात्मा गांधी और भगत सिंह दोनों ने ही भारतीय आजादी के संघर्ष को नई ऊंचाई तक पहुंचाया और अंग्रेजी हुकुमत के जुल्म सबके सामने लाकर रख दिए। इस विशेष सेमिनार में डॉ. कर्मवीर सिंह, डॉ. पुष्पा, डॉ. सुरेंद्र सिंह, डॉ. अनीता रानी, रश्मि इत्यादि उपस्थित रहे।

19

21 दैनिक जागरण III

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को गांधीजी ने प्रदान की नई दिशा : अमरदीप

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी के अमृत महोत्सव के तहत गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप की अध्यक्षता में महात्मा गांधी की 152वीं जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।

डा. अमरदीप ने कहा कि आजकल इतिहास के विषयों को विशेषकर महात्मा गांधी और भगत सिंह के विचारों के अध्ययन के बजाय विभिन्न भ्रांतियां फैलाई जा रही हैं। इनका निवारण अनिवार्य है। महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी जबकि भगत सिंह ने इस संग्राम को नई गति एवं धार दी। डा. विक्रम सिंह अमरावत ने कहा कि महात्मा गांधी और भगत सिंह दोनों ही महान विचारक थे। भगत सिंह अपने आपको को हिंसावादी नहीं कहते बल्कि वे बेरहम अंग्रेजी सरकार को सबक सिखाने के लिए इसका एक समय के लिए सहारा लेते हैं। प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि महात्मा गांधी और भगत सिंह दोनों ने ही आजादी के संघर्ष को मजबूत बनाया। इस मौके पर डा. कर्मवीर सिंह, डा. पुष्पा, डा. सुरेंद्र सिंह, डा. अनिता रानी, रश्मि ने भी अपने विचार रखे।

रामकरण दास भजनका के पुत्र 80 वर्षीय

अमर उजाला, चरखी दादरी

बवानीखेड़ा में माध्यमिक स्कूल था। उनके

2.10.21

महात्मा गांधी व भगत सिंह ने स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी : डॉ. अमरावत

चरखी दादरी। आजादी के अमृत महोत्सव शृंखला के तहत शुक्रवार को राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी महात्मा गांधी की 152 वीं जयंती पर सेमिनार आयोजित किया गया। सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि महात्मा गांधी और भगत सिंह के विचारों की पूरकता एवं विरोधता विषय पर सेमिनार आयोजित किया।

डॉ. अमरदीप ने कहा कि महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी। जबकि भगत सिंह ने इस संग्राम को धार दी, जिससे अंग्रेज घबरा गए थे । सेमिनार के मुख्य वक्ता डॉ. विक्रम सिंह अमरावत इतिहास एवं संस्कृति विभाग, गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद रहे। डॉ.अमरावत ने कहा कि महात्मा गांधी और भगत सिंह दोनों ही महान विचारक थे। महाविद्यालय के प्राचार्य एवं सेमिनार के अध्यक्ष राजकुमार वर्मा ने कहा कि महात्मा गांधी व भगत सिंह ने ही भारतीय आजादी के संघर्ष को नई ऊंचाई तक पहुंचाया। संवाद

31. Dr. Amardeep organised a special tree plantation drive on 09.10.2021 on the 15th Mahaparinirvan Diwas and contribution of great reformer Manyawar Saheb Kanshi Ram and planted tree on this occasion under आज़ादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम and described contribution Manyawar Saheb Kanshi Ram in Making of the Modern Society in Independent India.

दैनिक भास्कर चरखी दादरी 10-10-2021

कांशीराम ने आधुनिक समाज की स्थापना करने के लिए कई आंदोलन चलाए : डॉ. अमरदीप

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में मान्यवर कांशीराम के महापरिनिर्वाण दिवस पर पौधारोपण

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के इतिहास विभाग के तत्वावधान में मान्यवर कांशीराम के 15वें महापरिनिर्वाण दिवस पर वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. अमरदीप, डॉ. नरेंद्र सिंह, जितेंद्र और अमरदीप द्वारा पौधारोपण किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि कांशीराम ने सामाजिक एकता के साथ राष्ट्रीय एकता को सुनिश्चित करने के लिए एक बड़ा आंदोलन छेड़ा। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में ब्रिटिश गुलामी के साथ साथ भारतीय समाज में फैली कुरीतियां व अनेक प्रकार की असमानताएं भी बड़ी चुनौतियां थी। इनको दूर करने के डॉ. भीमराव अंबेडकर व अनेक नेताओं द्वारा कई आंदोलन चलाये गये। 1947 में जब भारत आजाद हुआ और नया संविधान लागू हुआ जिसमे भारत में नए और आधुनिक समाज की नींव रखी गई। परंतु उस समय भारत की बड़ी जनसंख्या असमानता एवं भेदभाव से पीड़ित रही। इस भेदभाव को समाप्त करने और उपेक्षित समुदायों में जागृति फैलाने का कार्य कांशीराम ने किया था। कार्यक्रम के अध्यक्ष और प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि कांशीराम ने भारत में आधुनिक समाज की स्थापना करने और सही अर्थों में राष्ट्र में सबकी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आंदोलन छेड़े। भारतीय समाज के उपेक्षित वर्गों को समाज की मुख्यधारा में लाने का भागीरथी प्रयास किया।

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में पौधारोपण करते कॉलेज स्टाफ।

कांशीराम के महापरिनिर्वाण दिवस पर बिरोहड़ कालेज में किया पौधारोपण

जागरण संवाददाता, झज्जर : आजादी के अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक कांशीराम के 15 वें महापरिनिर्वाण दिवस पर वृक्षारोपण किया।

इस अवसर पर डा. अमरदीप, डा. नरेंद्र सिंह, जितेंद्र और अमरदीप ने पौधारोपण किया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में ब्रिटिश गुलामी के साथ-साथ भारतीय समाज में फैली कुरीतियां व अनेक प्रकार की असमानताएं भी बड़ी चुनौतियां थी। इनको दूर करने के डा. भीमराव अंबेडकर व अनेक नेताओं ने कई आंदोलन चलाए। कार्यक्रम के अध्यक्ष और महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि कांशीराम ने भारत में आधुनिक समाज की स्थापना करने और सही अर्थों में राष्ट्र में सबकी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आंदोलन किए।

कांशीराम के महापरिनिर्वाण दिवस पर बिरोहड़ कालेज में पौधारोपण करते हुए। ● विज्ञप्ति

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 10-10-2021

अमृत महोत्सव श्रृंखला, महाविद्यालय बिरोहड़ में छात्रों ने किया पोधरोपण

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी के अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में सामाजिक एकता के पुरोधा मान्यवर कांशीराम के 15 वें महा परिनिर्वाण दिवस पर विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, डॉ. नरेंद्र सिंह, जितेन्द्र और अमरदीप द्वारा पौधारोपण किया गया। इस विशेष कार्यक्रम के संयोजक एव इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि कांशीराम ने सामाजिक एकता के साथ राष्ट्रीय एकता को सुनिश्चित करने के लिए एक बड़ा आन्दोलन छेड़ा। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में ब्रिटिश गुलामी के साथ साथ भारतीय समाज में फैली कुरीतियां व कई प्रकार की असमानताएं भी बड़ी चुनौतियां थी। इनको दूर करने के डॉ. भीमराव अम्बेडकर व कई नेताओं द्वारा कई बड़े बड़े आन्दोलन चलाए गए। 1947 में जब भारत आजाद हुआ और नया संविधान लागू हुआ जिसमें भारत में नए और आधुनिक समाज की नींव रखी गई। परन्तु उस समय भारत की बड़ी जनसंख्या असमानता एवं भेदभाव से पीड़ित रही। कार्यक्रम के अध्यक्ष और महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि कांशीराम ने भारत में आधुनिक समाज की स्थापना करने और सही अर्थों में राष्ट्र में सबकी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आन्दोलन छेड़े।

महाविद्यालय बिरोहड़ में पौधरोपण करते हुए युवक।

32. Dr. Amardeep from Govt. College Birohar (Jhajjar) worked as Convener and Dr. Karmvir Singh from S.K. Govt. College, Kanwali (Rewari) as Coordinator and jointly organised Ist Prof. K.C. Yadav Memorial Lecture in National Seminar on the 85th Birth Anniversary of eminent historian on History of Haryana, Professor K.C. Yadav on 11.10.2021.

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 12-10-2021

कानून व्यवस्था आमंत्रण, जल विभागाध्यक्ष मौजूद रहे।

राष्ट्रीय सेमिनार में प्रथम प्रोफेसर केसी यादव की स्मृति पर मेमोरियल लेक्चर का किया आयोजन

भास्कर न्यूज | झज्जर

सुप्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार प्रोफेसर केसी यादव की स्मृति में उनके 85वें जन्मदिन के अवसर पर राजकीय महाविद्यालय, बिरोहड़ और श्री कृष्ण राजकीय महाविद्यालय, कंवाली, रेवाड़ी के इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत राष्ट्रीय सेमिनार में प्रथम प्रोफेसर केसी यादव मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि प्रोफेसर केसी यादव के व्यक्तित्व और कृतित्व की स्मृति में यह पहला मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया गया। डॉ. अमरदीप ने कहा कि प्रोफेसर यादव ने इतिहास में नए आयाम स्थापित किए। हरियाणा का वास्तविक इतिहास लिखने का श्रेय इन्हें ही जाता है। प्रोफेसर के सी यादव का जन्म 11 अक्टूबर 1936 को वर्तमान रेवाड़ी जिले के नाहड़ ग्राम के एक साधारण किसान परिवार में हुआ और उन्होंने देश-विदेश में सैकड़ों शोध पत्र प्रकाशित किए। इस कार्यक्रम के गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में दिवंगत प्रोफेसर के सी यादव की पत्नी शशि प्रिया यादव उपस्थित रहीं। प्रोफेसर केसी यादव ने मूलतः कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय को अपना कर्म क्षेत्र बनाकर विश्व के टोक्यो, टेक्सास जैसे विश्वविद्यालयों एवं रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन शोध संस्थानों इत्यादि से भी जुड़े रहे। 27 मई 2021 को 85 वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी से इतिहास विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. आशुतोष कुमार रहे। डॉ. आशुतोष ने अपने वक्तव्य में कहा कि प्रोफेसर यादव पहले इतिहासकार थे जिन्होंने स्थापित किया कि 1857 की क्रांति मेरठ से नहीं बल्कि अम्बाला से शुरू हुई थी। प्रथम विश्व युद्ध में हरियाणा के सैनिकों योगदान पर प्रोफेसर यादव ने एक गहन अध्ययन प्रस्तुत किया था और उनकी शोध शैली को आगे बढ़ाकर हम उत्तर प्रदेश के सैनिकों के योगदान पर अभी कार्य कर रहे है। कार्यक्रम के संरक्षक राजकुमार वर्मा, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ एवं डॉ. सुधीर यादव, प्राचार्य, श्रीकृष्ण राजकीय महाविद्यालय, कवाली, जिला रेवाड़ी, ने संयोजक डॉ. अमरदीप एवं समन्वयक डॉ. कर्मवीर व उनके सभी साथियों का आभार प्रकट किया।

डॉ. यादव की याद में विश्वविद्यालय के बुद्धिजीवियों ने किया मंथन।

दैनिक भास्कर

चरखी दादरी भास्कर 12-10-2021

इतिहासकार प्रोफेसर केसी यादव को किया याद

चरखी दादरी | इतिहासकार प्रोफेसर केसी यादव की स्मृति में उनके 85वें जन्मदिवस के अवसर पर सोमवार को गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय और कृष्ण राजकीय महाविद्यालय, कंवाली के इतिहास विभाग के तत्वावधान में राष्ट्रीय सेमिनार किया गया। इसमें प्रथम प्रोफेसर केसी यादव मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया गया। संयोजक डॉ. अमरदीप ने बताया कि प्रोफेसर केसी यादव के व्यक्तित्व और कृतित्व की स्मृति में यह पहला मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संरक्षक प्राचार्य राजकुमार वर्मा, प्राचार्य एवं डॉ. सुधीर यादव, प्राचार्य, कृष्ण राजकीय महाविद्यालय, कवाली ने प्रोफेसर केसी यादव की स्मृति में आयोजित इस व्याख्यान श्रृंखला के प्रारंभ करने के लिए संयोजक डॉ. अमरदीप एवं समन्वयक डॉ. कर्मवीर एवं उनके सभी साथियों का आभार प्रकट किया।

अमर उजाला, चरखी दादरी 12.11.21

प्रो. यादव को प्रदेश के वास्तविक इतिहास लिखने का श्रेय : अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय और रेवाड़ी स्थित श्री कृष्ण राजकीय महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को इतिहासकार प्रोफेसर केसी यादव की स्मृति में राष्ट्रीय सेमिनार करवाया गया। कार्यक्रम के संयोजक और इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि प्रोफेसर केसी यादव ने इतिहास में नए आयाम स्थापित किए। हरियाणा का वास्तविक इतिहास लिखने का श्रेय इन्हें ही जाता है। गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में दिवंगत प्रोफेसर केसी यादव की पत्नी शशि प्रिया यादव ने भाग लिया।

मुख्य वक्ता बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से इतिहास विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. आशुतोष कुमार ने कहा कि प्रोफेसर यादव पहले इतिहासकार थे, जिन्होंने ये साबित किया कि 1857 की क्रांति मेरठ की बजाय अंबाला से शुरू हुई थी। प्रथम विश्व युद्ध में हरियाणा के सैनिकों योगदान पर प्रोफेसर यादव ने एक गहन अध्ययन प्रस्तुत किया था और उनकी शोध शैली को आगे बढ़ाकर हम उत्तर प्रदेश केसैनिकों के योगदान पर अभी कार्य कर रहे हैं। केसी यादव के प्रथम पीएचडी विद्यार्थियों में शामिल रहे डॉ. युवी सिंह ने बताया कि प्रोफेसर यादव शोध के लिए समर्पित थे और शुरुआत से ही उनका हर विद्यार्थी के साथ अटूट लगाव बना रहता था। सेमिनार में वरिष्ठ आईएएस डॉ. जेके आभीर, प्रोफेसर जगदीश यादव, प्रोफेसर रामेश्वर, डिप्टी डायरेक्टर डॉ. नरेंद्र यादव, डॉ. जगदीश यादव, डॉ. जितेंद्र, सवीन, डॉ. सुरेंद्र सिंह, अनिल यादव, गुजरात से प्रोफेसर विक्रम अमरावत, मुंबई से प्रोफेसर अजय लोखंडे ने भाग लिया।

प्रथम प्रोफेसर के.सी. यादव मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया गया

पानीपत, 11 अक्तूबर (हरप्रीत छतवाल) ः सुप्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार प्रोफेसर केसी यादव की स्मृति में उनके 85 वें जन्मदिन के अवसर पर 11 अक्टूबर को राजकीय महाविद्यालय, बिरोह?, झज्जर और श्री कृष्ण राजकीय महाविद्यालय, कंवाली, रेवाड़ी के इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत राष्ट्रीय सेमिनार में प्रथम प्रोफेसर के.सी. यादव मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ.अमरदीप ने बताया कि प्रोफेसर के सी यादव के व्यक्तित्व और कृतित्व की स्मृति में यह पहला मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया गया/ इस राष्ट्रीय सेमिनार में देशबंधु गुप्ता राजकीय महाविद्यालय पानीपत का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रोफेसर दलजीत कुमार ने कहा कि प्रोफेसर यादव ने इतिहास में नये आयाम स्थापित किये। हरियाणा का वास्तविक इतिहास लिखने का श्रेय इन्हें ही जाता है। प्रोफेसर के सी यादव का जन्म 11 अक्टूबर 1936 को वर्तमान रेवाड़ी जिले के नाहड़ ग्राम के एक साधारण किसान परिवार में हुआ और उन्होंने अपनी कड़ी मेहनत से भारत के प्रसिद्ध इतिहासकारों में अपना स्थान बनाया। उन्होंने तीन दर्जन से ज्यादा पुस्तकें लिखीं और देश-विदेश में सैकड़ों शोध पत्र प्रकाशित किए। इस कार्यक्रम के गेस्ट ऑ? ऑनर के रूप में दिवंगत प्रोफेसर के सी यादव की पत्नीशशि प्रिया यादव उपस्थित रहीं और उन्होंने बताया कि प्रोफेसर के सी यादव ने मूलत: कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय को अपना कर्म क्षेत्र बनाकर विश्व के टोक्यो, टेक्सास जैसे विश्वविद्यालयों एवं रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑ? ग्रेट ब्रिटेन शोध संस्थानों इत्यादि से भी जुड़े रहे। विगत 27 मई, 2021 को 85 वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी से इतिहास विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ आशुतोष कुमार रहे। डॉ. आशुतोष ने अपने वक्तव्य में कहा कि प्रोफेसर यादव पहले इतिहासकार थे जिन्होंने स्थापित किया कि 1857 की क्रांति मेरठ से नही बल्कि अम्बाला से शुरू हुई थी। प्रथम विश्व युद्ध में हरियाणा के सैनिकों योगदान पर प्रोफेसर यादव ने एक गहन अध्ययन प्रस्तुत किया था और उनकी शोध शैली को आगे ब?ाकर हम उत्तर प्रदेश के सैनिकों के योगदान पर अभी कार्य कर रहे है अध्यक्षीय संबोधन प्रोफ़ेसर केसी यादव के प्रथम पी एच डी विद्यार्थियों में शामिल रहे डॉ. यु वी सिंह, सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर, एस डी ,कॉलेज ,अंबाला ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि प्रोफेसर यादव शोध के लिए समर्पित थे और शुरुआत से ही उनका हर विद्यार्थी के साथ अटूट लगाव बना रहता था। इस कार्यक्रम में देश-विदेश से प्रोफेसर केसी यादव के साथी, शोध विद्यार्थी, इतिहास विषय के प्रोफेसर एवं प्राध्यापकों के अलावा अन्य क्षेत्रों से जुड़े हुए सैकड़ों विद्वानों ने भाग लिया और संक्षेप में अपने विचार प्रस्तुत किए। विशेष रुप से वरिष्ठ आईएएस डॉ. जे.के. आभीर, प्रोफेसर जगदीश यादव, प्रोफेसर रामेश्वर, डिप्टी डायरेक्टर डॉ. नरेंद्र यादव, डॉ. जगदीश यादव, डॉ. जितेंद्र, सवीन, डॉ. सुरेन्द्र सिंह, अनिल यादव, गुजरात से प्रोफेसर विक्रम अमरावत, मुंबई से प्रोफेसर अजय लोखंडे आदि शामिल रहे/ कार्यक्रम के संरक्षक श्री राजकुमार वर्मा, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय बिरोह? एवं डॉ. सुधीर यादव, प्राचार्य, श्री कृष्ण राजकीय महाविद्यालय, कवाली, जिला रेवाड़ी, ने प्रोफेसर केसी यादव की स्मृति में आयोजित इस व्याख्यान श्रृंखला के प्रारंभ करने के लिए संयोजक डॉ अमरदीप एवं समन्वयक डॉ कर्मवीर एवं उनके सभी साथियों का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के अंत में समन्वयक डॉ कर्मवीर सिंह ने सभी अतिथियों, मुख्य वक्ता और कार्यक्रम से जुड़े सभी विद्वानों का आभार जताया और इस तरह के स्मृति व्याख्यान कार्यक्रम प्रोफेसर केसी यादव के इतिहास लेखन एवं शोध के क्षेत्र में किए गए उनके अथक कार्य एवं लेखन को सच्ची श्रद्धांजलि बताया। डॉ. कर्मवीर के अनुसार इस तरह के कार्यक्रम इतिहास के वर्तमान और भावी विद्यार्थियों के लिए न केवल मार्गदर्शन बल्कि प्रेरणा का कार्य भी करेंगे।

फसलों के अवशेष न जलाने बारे जागरूकता वैन चलाई

पानीपत, 11 अक्तूबर (हरप्रीत छतवाल) ः कृषि एवं किसान कल्याण

अर्न्तराष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर 0 से 5 वर्ष

भारत देश हमारा Tue, 12 October 2021
https://charhdikala.timetv.news/c/63702930

सुप्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार प्रोफेसर केसी यादव की स्मृति में सैमीनार आयोजित

पानीपत (मुकेश शर्मा) सुप्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार प्रोफेसर केसी यादव की स्मृति में उनके 85 वें जन्मदिन के अवसर पर 11 अक्टूबर को राजकीय महाविद्यालय, बिरोहड़, झज्जर और श्री कृष्ण राजकीय महाविद्यालय, कंवाली, रेवाड़ी के इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत राष्ट्रीय सेमिनार में प्रथम प्रोफेसर के.सी. यादव मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि प्रोफेसर के सी यादव के व्यक्तित्व और कृतित्व की स्मृति में यह पहला मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया गया। इस राष्ट्रीय सेमिनार में देशबंधु गुप्ता राजकीय महाविद्यालय पानीपत का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रोफेसर दलजीत कुमार ने कहा कि प्रोफेसर यादव ने इतिहास में नये आयाम स्थापित कियेद्व हरियाणा का वास्तविक इतिहास लिखने का श्रेय इन्हें ही जाता है। प्रोफेसर के सी यादव का जन्म 11 अक्टूबर 1936 को वर्तमान रेवाड़ी जिले के नाहड़ ग्राम के एक साधारण किसान परिवार में हुआ और उन्होंने अपनी कड़ी मेहनत से भारत के प्रसिद्ध इतिहासकारों में अपना स्थान बनाया। उन्होंने तीन दर्जन से ज्यादा पुस्तकें लिखीं और देश-विदेश में सैकड़ों शोध पत्र प्रकाशित किए। इस कार्यक्रम के गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में दिवंगत प्रोफेसर के सी यादव की पत्नी श्रीमती शशि प्रिया यादव उपस्थित रहीं और उन्होंने बताया कि प्रोफेसर के सी यादव ने मूलतः कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय को अपना कर्म क्षेत्र बनाकर विश्व के

टोक्यो, टेक्सास जैसे विश्वविद्यालयों एवं रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन शोध संस्थानों इत्यादि से भी जुड़े रहे। विगत 27 मई, 2021 को 85 वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी से इतिहास विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ आशुतोष कुमार रहे। डॉ. आशुतोष ने अपने वक्तव्य में कहा कि प्रोफेसर यादव पहले इतिहासकार थे जिन्होंने स्थापित किया कि 1857 की क्रांति मेरठ से नही बल्कि अम्बाला से शुरू हुई थी। प्रथम विश्व युद्ध में हरियाणा के सैनिकों योगदान पर प्रोफेसर यादव ने एक गहन अध्ययन प्रस्तुत किया था और उनकी शोध शैली को आगे बढ़ाकर हम उत्तर प्रदेश के सैनिकों के योगदान पर अभी कार्य कर रहे है।

अध्यक्षीय संबोधन प्रोफेसर केसी यादव के प्रथम पी एच डी विद्यार्थियों में शामिल रहे डॉ. यु वी सिंह, सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर, एस डी, कॉलेज, अंबाला ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि प्रोफेसर यादव शोध के लिए समर्पित थे और शुरुआत से ही उनका हर विद्यार्थी के साथ अटूट लगाव बना रहता था। इस कार्यक्रम में देश-विदेश से प्रोफेसर केसी यादव के साथी, शोध विद्यार्थी, इतिहास विषय के प्रोफेसर एवं प्राध्यापकों के अलावा अन्य क्षेत्रों से जुड़े हुए सैकड़ों विद्वानों ने भाग लिया और संक्षेप में अपने विचार प्रस्तुत किए। विशेष रूप से वरिष्ठ आईएएस डॉ. जे.के. आभीर, प्रोफेसर जगदीश यादव, प्रोफेसर रामेश्वर, डिप्टी डायरेक्टर डॉ. नरेंद्र यादव, डॉ. जगदीश यादव, डॉ. जितेंद्र, सचीन, डॉ. सुरेन्द्र सिंह, अनिल यादव, गुजरात से प्रोफेसर विक्रम अमरावत, मुंबई से प्रोफेसर अजय लोखंडे आदि शामिल रहे। कार्यक्रम के संरक्षक राजकुमार वर्मा, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ एवं डॉ. सुधीर यादव, प्राचार्य, श्री कृष्ण राजकीय महाविद्यालय, कवाली, जिला रेवाड़ी ने प्रोफेसर केसी यादव की स्मृति में आयोजित इस व्याख्यान श्रृंखला के प्रारंभ करने के लिए संयोजक डॉ अमरदीप एवं समन्वयक डॉ कर्मवीर एवं उनके सभी साथियों का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के अंत में समन्वयक डॉ कर्मवीर सिंह ने सभी अतिथियों, मुख्य वक्ता और कार्यक्रम से जुड़े सभी विद्वानों का आभार जताया और इस तरह के स्मृति व्याख्यान कार्यक्रम प्रोफेसर केसी यादव के इतिहास लेखन एवं शोध के क्षेत्र में किए गए उनके अथक कार्य एवं लेखन को सच्ची श्रद्धांजलि बताया।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण पानीपत

पानीपत (मुकेश शर्मा) रविवार को राष्ट्रीय कानूनी सेवा प्राधिकरण (नालसा) और हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण (हालसा) के निर्देशानुसार और जिला एवम् सत्र न्यायधीश एवम अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण पानीपत सुश्री मनीषा बतरा और जिला विधिक सेवा प्राधिकरण पानीपत के सचिव एवम् सीजेएम अमित शर्मा के मार्गदर्शन में, आजादी का अमृत महोत्सव के तहत अखिल भारतीय जागरूकता और आउटरीच अभियान में, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण पानीपत

के द्वारा विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर मदर टेरेसा होम में मेडिकल चेकअप कैंप का आयोजन किया गया जिसमे सिविल हस्पताल की ओर से डॉक्टर आलोक जैन और डॉक्टर मोना नागपाल की टीम ने मदर टेरेसा में रह रहे बच्चो और

मिठ्ठन
स्वीट शॉप

33. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on the 78th Anniversary of Provisional Government of Azad Hind Fauj on 21.10.2021 and delivered an expert lecture on "Impact of Provisional Government of Azad Hind Fauj in Freedom Struggle of India"

अमर उजाला, झज्जर 22.10.2021

कार्यक्रम

राजकीय महाविद्यालय बिरहोड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग ने किया आयोजन

आजाद हिंद फौज की 78वीं वर्षगांठ पर किया सेमिनार

संवाद न्यूज एजेंसी

खुल्लावास। राजकीय महाविद्यालय बिरहोड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में आजाद हिंद फौज की प्रोविजनल सरकार की स्थापना के 78वीं वर्षगांठ पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इस विशेष सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि आजाद हिंद फौज की प्रोविजनल सरकार की स्थापना सुभाष चंद्र बोस की कर्मठता और देश सेवा का सर्वोत्तम जज्बे का प्रतीक है।

महानायक सुभाष चंद्र बोस को 'आजादी का सिपाही' के रूप में देखा जाता है। 21 अक्तूबर 1943 को सिंगापुर में आजाद हिंद फौज की प्रोविजनल सरकार की स्थापना ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की दिशा ही बदल थी। सुभाष चंद्र बोस इस सरकार के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और सेनाध्यक्ष थे। इस आजाद सरकार को उनके इस सरकार को जर्मनी, जापान, फिलिपिंस, चीन, इटली, मंचुको, और आयरलैंड ने मान्यता दी थी। 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हाल के सामने सुप्रीम कमांडर के रूप में नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने सेना को संबोधित करते हुए "दिल्ली चलो" का नारा दिया और जापानी सेना के साथ मिलकर बर्मा सहित आजाद हिंद फौज रंगून (यांगून) से होती हुई थलमार्ग से भारत की ओर बढ़ती हुई 18 मार्च सन 1944 ई. को कोहिमा और इंफाल के भारतीय मैदानी क्षेत्रों में पहुंच गई। ब्रिटिश व कामनवेल्थ सेना से जमकर मोर्चा लिया। उन्होंने आजाद हिंद फौज के नाम से पहला भारतीय सशस्त्र बल का नेतृत्व किया और उनके प्रसिद्ध नारे 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा' ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे इन तमाम भारतीयों के दिल में देशभक्ति पैदा कर दी थी।

इतिहास प्राध्यापक सवीन ने अपने व्याख्यान में बताया कि सुभाष चंद्र बोस महान स्वतंत्रता सेनानी थे। वे एक कुशल एवं होनहार प्रशासक और राजनीतिज्ञ थे।

सेमिनार को संबोधित करते वक्ता। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 22.10.2021

आजाद हिंद फौज के स्थापना दिवस पर करवाया सेमिनार

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग के तत्वावधान में आजाद हिंद फौज की स्थापना के 78वीं वर्षगांठ पर विशेष सेमिनार करवाया गया।

सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा 21 अक्तूबर 1943 को सिंगापुर में आजाद हिंद फौज की प्रोविजनल सरकार की स्थापना ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा ही बदल दी थी। पांच जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हॉल के सामने सुप्रीम कमांडर के रूप में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने सेना को संबोधित करते हुए दिल्ली चलो का नारा दिया। सेमिनार में इतिहास प्राध्यापक सवीन व संदीप कुमार ने भी विचार रखे। संवाद

34. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 'Indian Freedom Movement and Journalism' on the 131st Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Ganesh Shankar Vidhyarthi on 26.10.2021 and delivered an expert lecture on "Indian Freedom Struggle and Journalism: Contribution of Ganesh Shankar Vidhyarthi"

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 27-10-2021

स्वतंत्रता आन्दोलन व पत्रकारिता पर हुआ सेमीनार

सात्हावास | आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में गणेश शंकर विद्यार्थी के 131 वें जन्मदिन के उपलक्ष्य पर भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन और पत्रकारिता विषय पर एक सेमीनार का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि गणेश शंकर विद्यार्थी एक ऐसे पत्रकार थे, जिन्होंने अपनी लेखनी की ताकत से भारत में अंग्रेजी शासन की नींद उड़ा दी थी। संगोष्ठी के अध्यक्ष और महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने बताया कि इस विशेष संगोष्ठी में डॉ. अनीता रानी, सुनीता बेनीवाल, डॉ. सुरेन्द्र सिंह, डॉ. प्रदीप कुंडू, डॉ. नरेंद्र सिंह, पवित्रा देवी, सवीन, राजेश कुमार, रश्मि, शिवांशी, ओमबीर, पवन कुमार, सितू सिंह, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल उपस्थित रहे।

आयोजन

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और पत्रकारिता विषय पर करवाया सेमिनार

गणेश शंकर ने लेखनी से उड़ा दी थी अंग्रेजों की नींद : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में मंगलवार को गणेश शंकर विद्यार्थी के 131वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और पत्रकारिता विषय पर सेमिनार करवाया गया।

कार्यक्रम संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि गणेश शंकर विद्यार्थी एक ऐसे पत्रकार थे, जिन्होंने अपनी लेखनी की ताकत से भारत में अंग्रेजी शासन की नींद उड़ा दी थी। इस महान स्वतंत्रता सेनानी ने कलम और वाणी के साथ महात्मा गांधी के अहिंसावादी विचारों और क्रांतिकारियों को समान रूप से समर्थन और सहयोग दिया।

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में विचार रखती वक्ता। विज्ञप्ति

डॉ. अमरदीप ने बताया कि गणेश शंकर विद्यार्थी का जन्म 26 अक्तूबर 1890 को इलाहाबाद में हुआ था। उन्होंने 1907 में प्राइवेट परीक्षार्थी के रूप में एंट्रेंस परीक्षा पास की और आगे की पढ़ाई के लिए इलाहाबाद के कायस्थ पाठशाला में दाखिला लिया। इसी समय से उनका झुकाव पत्रकारिता की ओर हो गया और प्रसिद्ध लेखक पंडित सुंदर लाल के साथ वो हिंदी साप्ताहिक 'कर्मयोगी' के संपादन में सहायता करने लगे। आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण लगभग एक वर्ष तक अध्ययन के बाद 1908 में उन्होंने कानपुर के करेंसी आफिस में 30 रुपये महीने की नौकरी की पर एक अंग्रेज अधिकारी से कहासुनी हो जाने के कारण नौकरी छोड़ कानपुर के पृथ्वी नाथ हाई स्कूल में 1910 तक अध्यापन का कार्य किया। इसी दौरान उन्होंने सरस्वती, कर्मयोगी, स्वराज्य (उर्दू) और हितवार्ता जैसे प्रकाशनों में लेख लिखे। 1913 में कानपुर में एक क्रांतिकारी पत्रकार और स्वाधीनता कर्मी के तौर पर अपना क्रांतिकारी पत्रिका 'प्रताप' की स्थापना की और उत्पीड़न और अन्याय के खिलाफ आवाज बुलंद की।

प्रताप के माध्यम से उन्होंने पीड़ित किसानों, मिल मजदूरों और गरीबों के दुखों को उजागर किया। सरकार ने उन पर कई मुकदमे दर्ज और 5 बार उन्हें जेल भी भेजा। सेमिनार में डॉ. अनीता रानी, सुनीता बेनीवाल, डॉ. सुरेंद्र सिंह, डॉ. प्रदीप कुंडू, डॉ. नरेंद्र सिंह, पवित्रा देवी, सवीन, राजेश कुमार, रश्मि, शिवांशी, ओमबीर, पवन कुमार, सितु सिंह, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल आदि उपस्थित रहे।

अमर उजाला, चरखी दादरी 27.10.21

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 27.10.21

साम्प्रदायिक सद्भाव बनाने के प्रयासों में गणेश शंकर विद्यार्थी ने दी थी शहादत

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत मंगलवार को राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में गणेश शंकर विद्यार्थी के 131वें जन्मदिन के उपलक्ष्य पर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और पत्रकारिता विषय पर एक सेमीनार का आयोजन किया गया।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में गणेश शंकर विद्यार्थी की शहादत के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

इसके संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि गणेश शंकर विद्यार्थी एक ऐसे पत्रकार थे जिन्होंने अपनी लेखनी की ताकत से भारत में अंग्रेजी शासन की नींद उड़ा दी थी। इस महान स्वतंत्रता सेनानी ने कलम और वाणी के साथ-साथ महात्मा गांधी के अहिंसावादी विचारों और क्रांतिकारियों को समान रूप से समर्थन और सहयोग दिया। संगोष्ठी के अध्यक्ष और महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा मार्च 1931 में कानपुर में भयंकर हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए जिसमें हजारों लोग मारे गए। संगोष्ठी में डा. अनीता रानी, सुनीता बेनीवाल, डा. सुरेन्द्र सिंह, डा. प्रदीप कुंडू, डा. नरेंद्र सिंह, पवित्रा देवी, सवीन, राजेश कुमार, रश्मि, शिवांशी, ओमबीर, पवन कुमार, सीतू सिंह, डा. अजय कुमार, डा. राजपाल इत्यादि शामिल रहे।

गणेश शंकर विद्यार्थी की जयंती पर बिरहोड़ कॉलेज में हुआ सेमिनार

कार्यक्रम को संबोधित करते अतिथि। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में गणेश शंकर विद्यार्थी की जयंती के उपलक्ष्य पर 'भारतीय स्वंत्रता आंदोलन और पत्रकारिता' विषय पर एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि गणेश शंकर विद्यार्थी एक ऐसे पत्रकार थे, जिन्होंने अपनी लेखनी की ताकत से भारत में अंग्रेजी शासन की नींद उड़ा दी थी।

उन्होंने सरस्वती, कर्मयोगी, स्वराज्य (उर्दू) व हितवार्ता जैसे प्रकाशनों में लेख लिखे। सन 1913 में कानपुर में एक क्रांतिकारी पत्रकार और स्वाधीनता कर्मी के तौर पर अपना क्रान्तिकारी पत्रिका 'प्रताप' की स्थापना की।

गणेश शंकर विद्यार्थी ने आतंकियों के बीच जाकर हजारों लोगों को बचाया पर खुद एक ऐसी ही हिंसक भीड़ में फंस गए जिसने उनकी बेरहमी से हत्या कर दी। इस दौरान डॉ. अनीता रानी, सुनीता बेनीवाल, डॉ. सुरेन्द्र सिंह, डॉ. प्रदीप कुंडू, डॉ. नरेंद्र सिंह, पवित्रा देवी, सवीन, राजेश कुमार, रश्मि, शिवांशी, ओमबीर, पवन कुमार, सितु सिंह, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल इत्यादि उपस्थित रहे।

35. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 'Contribution of Sardar Vallabhbhai Patel in the Making of United India' on the 146th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Sardar Vallabhbhai Patel on 29.10.2021 and delivered an expert lecture on "Untold Saga of the Making of the United India".

'अखंड भारत में सरदार पटेल का अतुल्य योगदान'

अमर उजाला, चरखी दादरी 30.10.21

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत बिरोहड़ कॉलेज में हुआ कार्यक्रम

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग के तत्वावधान में सरदार वल्लभ भाई पटेल के 146वें जन्मदिन पर अखंड भारत में सरदार पटेल का योगदान विषय पर संगोष्ठी की गई। संगोष्ठी के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप कहा कि सरदार पटेल स्वतंत्रता सेनानी, आजाद भारत के पहले उप प्रधानमंत्री और गृहमंत्री थे।

वे देश को एक सूत्र में पिरोने का सपना देखते थे। अमरदीप ने बताया कि 31 अक्तूबर 1875 को वल्लभ भाई पटेल का जन्म गुजरात के साधारण कृषक परिवार में हुआ था। उन्होंने 22 वर्ष की उम्र में मैट्रिक की पढ़ाई पूरी की। बाद में इंग्लैंड जाकर पढ़ाई की। स्वदेश लौटकर अहमदाबाद में बेरिस्टर के रूप कार्य करने लगे परंतु महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने सामाजिक बुराई के खिलाफ अपनी आवाज उठाई और 1917 के खेड़ा आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में विद्यार्थियों को जानकारी देते हुए सहायक प्रोफेसर डॉ. अमरदीप। संवाद

1928 के बारडोली सत्याग्रह के सफल नेतृत्व के कारण जनता ने उन्हें सरदार की उपाधि दी थी। महात्मा गांधी की अहिंसा की नीति ने उनको बहुत ज्यादा प्रभावित किया। असहयोग आंदोलन, स्वराज आंदोलन, दांडी यात्रा, भारत छोड़ो आंदोलन में सरदार पटेल की भूमिका अहम रही। भारत की आजादी के पश्चात गृहमंत्री के रूप में उनकी पहली प्राथमिकता देसी रियासतों को भारत में मिलाना था। इस काम को उन्होंने करके दिखाया।

डॉ. अजय कुमार ने कहा कि सरदार पटेल बचपन से ही बड़े निर्भीक स्वाभिमानी और क्रांतिकारी विचारों के थे। इस दौरान इतिहास प्राध्यापक सवीन, जितेंद्र, पवन कुमार, डॉ.राजपाल, अजय सिंह और संदीप कुमार आदि उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 30.10.21

अखंड भारत के निर्माण में सरदार पटेल का योगदान सराहनीय

चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में सरदार वल्लभ भाई पटेल के 146वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में अखंड भारत में सरदार पटेल का योगदान विषय पर विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी के संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि सरदार पटेल एक स्वतंत्रता सेनानी, आजाद भारत के पहले उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री, देश को एक सूत्र में पिरोने का सपना देखने वाले, देश के लिए जीवन समर्पित करने वाले महामानव थे।

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 30-10-2021

सरदार वल्लव भाई पटेल के 146वें जन्मदिन के उपलक्ष्य पर संगोष्ठी हुई

झज्जर | आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में सरदार वल्लव भाई पटेल के 146वें जन्मदिन के उपलक्ष्य पर अखंड भारत में सरदार पटेल का योगदान विषय पर एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि सरदार पटेल एक स्वतंत्रता सेनानी, आजाद भारत के पहले उप प्रधानमंत्री और गृहमंत्री, लौह पुरुष, देश को एक सूत्र में पिरोने का सपना देखने वाले, देश के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले महामानव थे। 1947 में देश की आजादी के दौरान भारत को एकसूत्र में पिरोने का जो साहसी काम सरदार पटेल ने किया, दुनिया में वैसी दूसरी कोई मिसाल नहीं मिलती। डॉ. अमरदीप ने बताया कि 31 अक्टूबर 1875 को वल्लव भाई पटेल का जन्म गुजरात के एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था।

36. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 'हरियाणा: अतीत से वर्तमान तक' on the eve of 55th Haryana Day on 30.10.2021 and delivered an expert lecture on "History of Haryana: Unexplored Dimensions".

.

चरखी दादरी भास्कर 31-10-2021

इतिहास में हमेशा हरियाणा की धरती पर युद्धों ने नई दिशा दी है: डॉ. अमरदीप

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में 'हरियाणा: अतीत से वर्तमान तक' विषय पर हुई संगोष्ठी

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में 55वें हरियाणा दिवस के उपलक्ष्य पर 'हरियाणा: अतीत से वर्तमान तक' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस संगोष्ठी के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि हरियाणा का इतिहास प्राचीन काल से ही समृद्ध रहा है। हरियाणा से प्रारंभ से ही कुरुक्षेत्र के माध्यम से नैतिकता और वीरता का पाठ न केवल भारत को बल्कि पूरी दुनिया को पढ़ाया। वर्धन वंश के समय हरियाणा ने पूरे देश के पटल पर एक सुनहरे इतिहास की रचना की थी। पानीपत के युद्धों ने पूरे भारत के इतिहास पर अमित छाप छोड़ी है। डॉ. अमरदीप ने बताया कि नये शोध से यह स्थापित हो गया है कि 1857 का महान विद्रोह मेरठ से शुरू न होकर बल्कि अंबाला से शुरू हुआ था, जो पूरे हरियाणावासियों के लिए गर्व की बात है। इतिहास प्राध्यापक सवीन हरियाणा के लोग स्वछंद एवं आजादी प्रेमी थे। इतिहास में हमेशा हरियाणा की धरती पर युद्धों ने नई दिशा दी है। गणित प्राध्यापक डॉ. नरेंद्र सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में हरियाणा पूरे देश का मान सम्मान बढ़ा रहा है। हर प्रकार की प्रतियोगिताओं में हरियाणा आगे रहता है। आस पड़ोस के राज्यों में भी हरियाणा के लोग उनके मधुर स्वभाव के लिए लोकप्रिय रहते है।

डॉ. अजय कुमार ने कहा कि 1857 की क्रांति के पश्चात हरियाणा में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों पंडित नेकी राम, श्रीराम शर्मा, लाला मुरलीधर, चौधरी छोटू राम जैसे अनेक महान क्रांतिकारियों और नेताओं न केवल हरियाणा के इतिहास को बल्कि पूरे भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दी है। डॉ. राजपाल गुलिया ने बताया कि हरियाणा के जवानों ने आजादी के बाद में भारत को 1948, 1962, 1965, 1971 और 1999 के युद्धों को जितवाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है और झज्जर जिले ने इसमें अग्रणी भूमिका निभाई है। इस संगोष्ठी में एमए इतिहास द्वितीय वर्ष के प्रियंका शर्मा और गुरुदीप ने हरियाणा के समृद्ध इतिहास पर व्याख्यान दिए। एमए इतिहास द्वितीय वर्ष की प्रियंका और बीए द्वितीय वर्ष की आंचल और अंजली ने हरियाणा की संस्कृति से ओतप्रोत कविताएं और रागिनियां प्रस्तुत की।

37. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 'Birsa Munda and Freedom Struggle Movement' on the 146th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Birsa Munda on 15.11.2021 and delivered an expert lecture on "Contribution of Birsa Munda in Indian Freedom Struggle".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 16-11-2021

स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा के जन्मदिन पर सेमिनार

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा के 146 वें जन्मदिन के उपलक्ष्य पर भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में बिरसा मुंडा का योगदान विषय पर एक विशेष सेमीनार का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि बिरसा मुंडा पहले स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने अंग्रेजों को भारत छोड़ने का नारा दिया था। सांस्कृतिक मजबूती देने के लिए इसाई धर्म का बहिष्कार करके भारत की मूल निवासियों की संस्कृति को पुनः अपनाने के लिए प्रेरित किया। इसके साथ साथ राजनीतिक सत्ता परिवर्तन के लिए उन्होंने जोरदार रूप से आन्दोलन किया जिससे इतिहास में उलगुलान के नाम से जाना जाता है। उन्होंने अंग्रेजी राज की समाप्ति का आह्वान किया और जनता को एकजुट करने का उदाहरण प्रस्तुत किया जो परवर्ती काल में भी इसकी पुनरावर्ती देखी जाती है। डॉ. नरेंद्र सिंह, सहायक प्रोफेसर ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की महान सेनानी का जन्म 1875 में आजकल के झारखण्ड में हुआ था।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 16.11.21

स्वतंत्रता सेनानी वीर बिरसा मुंडा की शहादत को किया याद

चरखी दादरी के गांव बिरोहड़ स्थित कालेज में स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा के बारे में बताते प्रो. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी वीर बिरसा मुंडा के 146वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में बिरसा मुंडा का योगदान विषय पर सेमीनार के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि बिरसा मुंडा पहले स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने अंग्रेजों को भारत छोड़ने का नारा दिया था। उन्होंने कहा था कि गौरों वापस जाओ, महारानी राज जाएगा, अबुआ राज आएगा। बिरसा मुंडा ने परंपरागत लोकतंत्र की बहाली पर जोर देते हुए आदिम साम्यवाद की स्थापना पर बल दिया। जहां जंगलों की सभी संपत्तियों पर वहां के निवासियों का अधिकार होगा ना कि ब्रिटिश सरकार का। बिरसा मुंडा ने समाज में फैली कुरीतियों, अंधविश्वास और ऊंच नीच के भाव को दूर करने का आह्वान किया। सहायक प्रोफेसर सवीन ने कहा कि बिरसा मुंडा के अतुलनीय योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने उनके जन्मदिवस को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने का निश्चय किया है। डा. नरेंद्र सिंह ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इस महान सेनानी का जन्म 15 नवंबर 1875 में झारखंड में हुआ था। महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा बिरसा मुंडा ने भारतीय आजादी के लिए अपना अमूल्य बलिदान दिया। इस मौके पर जितेंद्र, डा. अजय कुमार व अजय सिंह ने भी अपने विचार रखे। (जासं)

38. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 'विनोभा भावे और भूदान आन्दोलन' on the 39th Death Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer Vinoba Bhave on 15.11.2021 and delivered an expert lecture on "Contribution of Vinoba Bhave in the Making of New India"

चरखी दादरी भास्कर 16-11-2021

भारतीय आजादी के आंदोलन में बिनोबा भावे का अद्वितीय स्थान : डॉ. अमरदीप

बिनोबा भावे की 39वीं पुण्यतिथि पर सेमिनार का किया आयोजन

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी बिनोबा भावे की 39वीं पुण्यतिथि पर 'विनोभा भावे और भूदान आंदोलन' सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि भारतीय आजादी के आंदोलन में आचार्य बिनोबा भावे का अद्वितीय स्थान है।

आजादी के आंदोलन में जहां एक और व्यक्तिगत सत्याग्रह द्वारा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दी और आजादी के पश्चात भूदान आंदोलन के जरिये एक नये एवं समतामूलक भारत की स्थापना में अहम भूमिका निभाई। डॉ. अमरदीप ने बताया कि साल 1951 में वह आंध्र प्रदेश (अब तेलंगाना) के हिंसाग्रस्त क्षेत्र की यात्रा पर थे। 18 अप्रैल 1951 को पोचमपल्ली गांव के अछूतों ने उनसे भेंट की। उन लोगों ने बिनोबा भावे से करीब 80 एकड़ भूमि उपलब्ध कराने का आग्रह किया ताकि वे लोग अपना जीवन-यापन कर सकें।

बिनोबा भावे ने गांव के जमीनदारों से आगे बढ़कर अपनी जमीन दान करने और अछूतों को बचाने की अपील की। उनकी अपील का असर एक जमीनदार पर हुआ जिसने सबको हैरत में डालते हुए अपनी जमीन दान देने का प्रस्ताव रखा। इस घटना से भारत के त्याग और अहिंसा के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया। यहीं से आचार्य विनोबा भावे का भूदान आंदोलन शुरू हो गया। यह आंदोलन 13 सालों तक चलता रहा। इस दौरान विनोबा ने देश के कोने-कोने का भ्रमण किया। उन्होंने करीब 58,741 किलोमीटर सफर तय किया। इस आंदोलन के माध्यम से वह गरीबों के लिए 44 लाख एकड़ भूमि दान के रूप में हासिल करने में सफल रहे। उन जमीनों में से 13 लाख एकड़ जमीन को भूमिहीन किसानों के बीच बांट दिया गया। विनोबा भावे के इस आंदोलन की न सिर्फ भारत बल्कि विश्व में भी काफी प्रशंसा हुई। सेमिनार के अध्यक्ष और प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा सामुदायिक नेतृत्व के लिए 1958 में अंतरराष्ट्रीय रमन मगसायसाय पुरस्कार पाने वाले वह पहले व्यक्ति थे। 1983 में मरणोपरांत उनको देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया। इस सेमिनार में सवीन, डॉ. नरेंद्र सिंह, जितेंद्र, डॉ. अजय कुमार, अजय सिंह आदि उपस्थित रहे।

39. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special online Seminar on 106th martyrdom of great revolutionary and Great Freedom Fighter Kartar Singh Sarabha on 16.11.2021 and delivered an expert lecture on "Contribution of Kartar Singh Sarabha and First Phase of Revolutionary Movement in India".

आख, हृदय व विभिन्न प्रकार के मानव बिरहा कला स विज्ञान समन्वयक व

अमर उजाला, चरखी दादरी 17.11.21

छोटी सी उम्र में सराभा ने दिया सर्वोच्च बलिदान : डॉ. अमरदीप

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी करतार सिंह सराभा के 106 वें शहीदी दिवस पर ऑनलाइन सेमिनार आयोजित किया गया।

सेमिनार के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि देश को आजादी दिलवाने में जिन क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की आहुति दी, उन निर्भय स्वतंत्रता सेनानियों में करतार सिंह सराभा भी थे, जिन्होंने मात्र 19 वर्ष की उम्र में भारत के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। करतार सिंह काफी छोटे थे तभी इनके पिता का निधन हो गया था। उन्होंने बताया कि 21 अप्रैल 1913 को कैलिफोर्निया में रह रहे भारतीयों ने एकत्र हो एक क्रांतिकारी संगठन गदर पार्टी की स्थापना की। गदर पार्टी का मुख्य उद्देश्य सशस्त्र संघर्ष द्वारा भारत को अंग्रेजी गुलामी से मुक्त करवाना और लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना करना था। इस मौके पर प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि 13 सितंबर 1915 को करतार सिंह और उनके साथियों को लाहौर सेंट्रल जेल भेज दिया गया था। संगोष्ठी में सवीन, जितेंद्र, डॉ. राजपाल गुलिया ने भाग लिया। संवाद

40. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 164th martyrdom of great revolutionary and Great Freedom Fighter Uda Devi Pasi on 17.11.2021 and delivered an expert lecture on "Untold History of 1857 and Exemplary Contribution of Uda Devi".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 18-11-2021

महान क्रांतिकारी वीरांगना ऊदा देवी के 164 वें शहीदी दिवस उनके साहस की चर्चा की

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी वीरांगना ऊदा देवी के 164वें शहीदी दिवस के अवसर पर एक ऑनलाइन सेमीनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि भारतीय इतिहास के गुमनाम योद्धाओं में से एक वीरांगना ऊदा देवी थी जिसने अकेले ही 36 ब्रिटिश सैनिकों को मौत के घाट उतार कर 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उल्लेखनीय भूमिका निभाई थीं। वीरांगना ऊदा देवी लखनऊ के पास उजिरियांव गांव में जन्म हुआ था। बचपन से वह जुझारू स्वभाव की थी। उनके पति मक्का पासी अवध के नवाब वाजिद अली शाह की पलटन में एक सैनिक थे। देशी रियासतों पर अंग्रेजों के बढ़ते हस्तक्षेप के मद्देनजर जब वाजिद अली शाह ने महल की रक्षा के उद्देश्य से स्त्रियों का एक सुरक्षा दस्ता बनाया तो उसके एक सदस्य के रूप में ऊदा देवी को भी नियुक्त किया।

ऊदा देवी ने बदला लेने के लिए पुरुष का वेश धारण किया था : अपनी बहादुरी और तुरंत निर्णय लेने की उनकी क्षमता से नवाब की बेगम और देश के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की नायिकाओं में एक बेगम हजरत महल बहुत प्रभावित हुईं। 16 नवंबर 1857 को बाग में शरण लिए इन 2000 भारतीय सिपाहियों का ब्रिटिश फौजों द्वारा संहार कर दिया गया था। इस लड़ाई में उदा देवी पासी के पति मक्का पासी जो कि सेनापति थे कि मृत्यु हो जाती है उसके पश्चात, उदा देवी अंग्रेजों से बदला लेने के लिए पुरुष का वेश धारण कर अकेले ही अंग्रजों से लोहा लेने निकल पड़ी और बन्दूक और कुछ गोल बारूद लेकर एक ऊंचे पीपल के पेड़ पर चढ़ गई जहां पर अंग्रेज सैनिक पानी पीने और आराम करने आते थे। एक-एक करके अपनी चालाकी और बुद्धिमत्ता से उदा देवी ने 36 अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया। इस अवसर पर महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने सवीन, जितेन्द्र, डॉ. राजपाल गुलिया उपस्थित रहे।

किसानों के अलावा अन्य किसी को उम्मीद है।

अमर उजाला, चरखी दादरी 18.11.21

उदा देवी ने 36 अंग्रेजों को मौत के घाट उतार लिया था बदला

संवाद न्यूज एजेंसी

महान क्रांतिकारी उदा देवी के 164वें शहीदी दिवस पर ऑनलाइन सेमिनार का आयोजन

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी वीरांगना उदा देवी के 164 वें शहीदी दिवस पर ऑनलाइन सेमिनार किया गया।

सेमिनार के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि भारतीय इतिहास के गुमनाम योद्धाओं में वीरांगना उदा देवी भी थी, जिसने अकेले ही 36 ब्रिटिश सैनिकों को मौत के घाट उतार कर 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। वीरांगना उदा देवी का जन्म लखनऊ के पास उजिरियांव गांव में हुआ था। बचपन से वह जुझारू स्वभाव की थी। उनके पति मक्का पासी अवध के नवाब वाजिद अली शाह की पलटन में सैनिक थे।

देशी रियासतों पर अंग्रेजों के बढ़ते हस्तक्षेप के मद्देनजर जब वाजिद अली शाह ने महल की रक्षा के उद्देश्य से स्त्रियों का एक सुरक्षा दस्ता बनाया तो उसके एक सदस्य के रूप में उदा देवी को भी नियुक्त किया। अपनी बहादुरी और तुरंत निर्णय लेने की उनकी क्षमता से नवाब की बेगम और देश के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की नायिकाओं में बेगम हजरत महल बहुत प्रभावित हुईं। नियुक्ति के कुछ ही दिनों बाद उदा देवी को बेगम हजरत महल की महिला सेना की टुकड़ी का कमांडर बना दिया गया। उसी समय डाउसन ने पीपल के पेड़ की ओर देखकर कुछ मौजूद होने का वहां इशारा किया और उसे तुरंत गोली मारने का आदेश दे दिया। गोली लगने से उदा देवी नीचे गिर पड़ी और वीरगति को प्राप्त हुई। बाद में जब उनके सर से पगड़ी हटाई तो पता चला कि ये महिला है।

सेमिनार के अध्यक्ष एवं महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि इस वीर महिला पर गोली चलाने पर अंग्रेज अफसर को बहुत पश्चाताप हुआ था और उसने कहा अगर मुझे पहले पता होता कि तुम एक महिला हो तो शायद मैं तुम्हें गोली मारने का आदेश नहीं देता। वीरता से अभिभूत होकर डाउसन ने हैट उतारकर वीरांगना उदा देवी को श्रद्धांजलि दी। उदा देवी की एक प्रतिमा लखनऊ में स्थापित की गई है। सेमिनार में प्रवक्ता सवीन, जितेंद्र, डॉ. राजपाल गुलिया उपस्थित रहे।

41. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 'Revolutionary Movement and Unforgettable Contribution of Batukeshwar Dutt' on the 111st Birth Anniversary of Great Revolutionary and Freedom Fighter Batukeshwar Dutt on 18.11.2021 and delivered an expert lecture on "Revolutionary Movement and Unforgettable Contribution of Batukeshwar Dutt".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 19-11-2021

स्वतंत्रता सेनानी बटुकेश्वर दत्त के 111वें जन्मदिन पर किया याद

स्वतंत्रता सेनानी पर विचार व्यक्त करते हुए टीचर।

झज्जर | आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी बटुकेश्वर दत्त के 111वें जन्मदिन के उपलक्ष्य पर क्रांतिकारी आन्दोलन और बटुकेश्वर दत्त का अविस्मरणीय योगदान विषय पर एक विशेष सेमीनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि बटुकेश्वर दत्त ने क्रांतिकारी आन्दोलन के अविस्मरणीय योद्धा थे जिन्होंने ब्रिटिश तानाशाही और अन्याय के खिलाफ अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। बटुकेश्वर दत्त का जन्म 18 नवम्बर 1910 को ग्राम-औरी, बंगाल में हुआ था। इनकी स्नातक स्तरीय शिक्षा पीपीएन कॉलेज कानपुर में सम्पन्न हुई। इस विशेष सेमिनार में सवीन, डॉ. नरेंद्र सिंह, जितेन्द्र, डॉ. अजय कुमार, अजय सिंह और डॉ. राजपाल गुलिया उपस्थित रहे।

42. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on the 193rd Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Rani Lashmibai on 20.11.2021 and delivered an expert lecture on "Revolt of 1857 and Contribution of Rani Lakshmibai".

अमर उजाला, चरखी दादरी 21.11.2021

बेटे को पीठ पर बांध रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजी सेना को दी मात : डॉ. अमरदीप

अमृत महोत्सव के अंतर्गत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में रानी लक्ष्मीबाई की जयंती पर सेमिनार

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग द्वारा रानी लक्ष्मीबाई के 193वीं जयंती के उपलक्ष्य में सेमिनार आयोजित किया गया। इसके संयोजक और इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1857 के महान संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

डॉ. अमरदीप ने बताया लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवंबर 1828 को बनारस में हुआ था। झांसी के राजा गंगाधर के विवाह के पश्चात लक्ष्मीबाई ने महिला सेना टुकड़ी का निर्माण किया। 1857 के समर के दौरान जब 14 मार्च 1857 से आठ दिन तक तोपें किले से आग उगलती रहीं तो अंग्रेज सेनापति ह्यूरोज लक्ष्मीबाई की किलेबंदी देखकर दंग रह गया। रानी लक्ष्मीबाई पीठ पर दत्तक पुत्र दामोदर राव को बांधे युद्ध करती रही। झांसी की मुट्ठी भर सेना ने रानी को सलाह दी कि वह कालपी की ओर चली जाए। झलकारी बाई और मुंदर सखियों ने भी रणभूमि में अपना खूब कौशल दिखाया। अपने विश्वसनीय चार-पांच घुड़सवारों को लेकर रानी कालपी की ओर बढ़ी। अंग्रेज सैनिक रानी का पीछा करते रहे। कैप्टन वाकर ने उनका पीछा किया और उन्हें घायल कर दिया।

डॉ. अमरदीप ने बताया कि 22 मई 1857 को क्रांतिकारियों को कालपी छोड़कर ग्वालियर जाना पड़ा। 17 जून को फिर युद्ध हुआ। रानी के भयंकर प्रहारों से अंग्रेजों को पीछे हटना पड़ा। महारानी की विजय हुई, लेकिन 18 जून को ह्यूरोज स्वयं युद्धभूमि में आ डटा। 18 जून 1857 को बाबा गंगादास की कुटिया में जहां इस वीर महारानी ने प्राणांत किया वहीं चिता बनाकर उनका अंतिम संस्कार किया गया। सेमिनार में डॉ. नरेंद्र सिंह, सबीन, जितेंद्र, डॉ. अजय कुमार और अजय सिंह आदि उपस्थित रहे।

बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में सहायक प्रोफेसर व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 21-11-2021

रानी लक्ष्मीबाई के 193वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एक विशेष सेमिनार हुआ

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग द्वारा रानी लक्ष्मीबाई के 193वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया।

इस सेमिनार के संयोजक और इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1857 के महान संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवंबर 1828 को बनारस में हुआ था। झांसी के राजा गंगाधर के विवाह के पश्चात लक्ष्मीबाई ने महिला सेना टुकड़ी का निर्माण किया। 1857 के समर के दौरान जब 14 मार्च, 1857 से आठ दिन तक तोपें किले से आग उगलती रहीं तो अंग्रेज सेनापति ह्यूरोज लक्ष्मीबाई की किलेबंदी देखकर दंग रह गया। रानी लक्ष्मीबाई ने पीठ पर दत्तक पुत्र दामोदर राव को बांधे भयंकर युद्ध करती रहीं। झांसी की मुट्ठी भर सेना ने रानी को सलाह दी कि वह कालपी की ओर चली जाएं। झलकारी बाई और मुंदर सखियों ने भी रणभूमि में अपना खूब कौशल दिखाया। अपने विश्वसनीय चार-पांच घुड़सवारों को लेकर रानी कालपी की ओर बढ़ी। अंग्रेज सैनिक रानी का पीछा करते रहे. कैप्टन वाकर ने उनका पीछा किया और उन्हें घायल कर दिया।

रानी लक्ष्मी बाई के बारे में विचार व्यक्त करते हुए।

डॉ. अमरदीप ने बताया कि 22 मई, 1857 को क्रांतिकारियों को कालपी छोड़कर ग्वालियर जाना पड़ा। 17 जून को फिर युद्ध हुआ। रानी के भयंकर प्रहारों से अंग्रेजों को पीछे हटना पड़ा महारानी की विजय हुई, लेकिन 18 जून को ह्यूरोज स्वयं युद्धभूमि में आ डटा। 18 जून, 1857 को बाबा गंगादास की कुटिया में जहां इस वीर महारानी ने प्राणांत किया वहीं चिता बनाकर उनका अंतिम संस्कार किया गया। इस विशेष सेमिनार में डॉ. नरेंद्र सिंह, सवीन, जितेंद्र, डॉ. अजय कुमार और अजय सिंह उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 21-11-2021

1857 के महान संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई ने निभाई थी महत्वपूर्ण भूमिका

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में रानी लक्ष्मीबाई के 193वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के संयोजक और इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1857 के महान संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवंबर 1828 को बनारस में हुआ था। झांसी के राजा गंगाधर के विवाह के पश्चात लक्ष्मीबाई ने महिला सेना टुकड़ी का निर्माण किया। 1857 के समर के दौरान जब 14 मार्च, 1857 से आठ दिन तक तोपें किले से आग उगलती रहीं तो अंग्रेज सेनापति ह्यूरोज लक्ष्मीबाई की किलेबंदी देखकर दंग रह गया। रानी लक्ष्मीबाई ने पीठ पर दत्तक पुत्र दामोदर राव को बांधे भयंकर युद्ध करती रहीं। झांसी की मुट्ठी भर सेना ने रानी को सलाह दी कि वह कालपी की ओर चली जाएं। झलकारी बाई और मुंदर सखियों ने भी रणभूमि में अपना खूब कौशल दिखाया। अपने विश्वसनीय चार-पांच घुड़सवारों को लेकर रानी कालपी की ओर बढ़ीं। अंग्रेज सैनिक रानी का पीछा करते रहे. कैप्टन वाकर ने उनका पीछा किया और उन्हें घायल कर दिया। डॉ. अमरदीप ने बताया कि 22 मई, 1857 को क्रांतिकारियों को कालपी छोड़कर ग्वालियर जाना पड़ा। 17 जून को फिर युद्ध हुआ। रानी के भयंकर प्रहारों से अंग्रेजों को पीछे हटना पड़ा. महारानी की विजय हुई, लेकिन 18 जून को ह्यूरोज स्वयं युद्धभूमि में आ डटा। 18 जून, 1857 को बाबा गंगादास की कुटिया में जहां इस वीर महारानी ने प्राणांत किया वहीं चिता बनाकर उनका अंतिम संस्कार किया गया। इस विशेष सेमिनार में डॉ. नरेंद्र सिंह, सवीन, जितेंद्र, डॉ. अजय कुमार और अजय सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

बिरोहड़ के गवर्नमेंट कॉलेज में रानी लक्ष्मीबाई के जन्मदिवस पर विशेष सेमिनार

43. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 'Jhalkari Bai and Freedom Struggle of 1857' on 191st Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Jhalkari Bai on 23.11.2021 and delivered an expert lecture on "Jhalkaribai: The Warrior of Freedom struggle of 1857".

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 24-11-2021

चरखी दादरी

1857 के महान संग्राम में झलकारी बाई ने वीरता और शौर्य का अद्भुत प्रदर्शन किया: डॉ. अमरदीप

बिरोहड़ के कॉलेज में स्वतंत्रता सेनानी झलकारी बाई के 191वें जन्मदिवस पर किया सेमिनार

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी झलकारी बाई के 191वें जन्मदिवस के अवसर पर झलकारी बाई और 1857 का स्वतंत्रता संग्राम विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1857 के महान संग्राम में झलकारी बाई ने वीरता और शौर्य का अद्भुत प्रदर्शन किया। रानी लक्ष्मीबाई को झांसी से सुरक्षित निकालने के लिए अदम्य साहस का प्रदर्शन किया। इस महान वीरांगना का जन्म 22 नवंबर 1830 को झांसी में हुआ था। झलकारी बाई के पति पूर्णसिंह झांसी की सेना में तोपची थे। वे एक साधारण सैनिक की तरह रानी लक्ष्मीबाई की सेना में शामिल हुई थी। लेकिन बाद में वह रानी लक्ष्मीबाई की विशेष सलाहकार एवं महिला सेना की सेनापति बनी और महत्वपूर्ण निर्णयों में भी भाग लेने लगी। डॉ. अमरदीप ने बताया कि 1857 के विद्रोह के समय जनरल रोज ने अपनी विशाल सेना के साथ 23 मार्च 1858 को झांसी पर आक्रमण किया। रानी ने वीरतापूर्वक अपने 5000 के सैन्य दल से उस विशाल सेना का सामना किया। रानी कालपी में पेशवा द्वारा सहायता की प्रतीक्षा कर रही थी, लेकिन उन्हें कोई सहायता नहीं मिल सकी क्योंकि तात्या टोपे जनरल रोज से पराजित हो चुके थे। जल्द ही अंग्रेज फौज झांसी में घुस गयी थी और रानी अपनी झांसी को बचाने के लिए जी जान से लड़ रही थी। तभी झलकारीबाई ने रानी लक्ष्मीबाई के प्राणों को बचाने के लिये खुद को रानी बताते हुए लड़ने का फैसला किया, इस तरह झलकारीबाई ने पूरी अंग्रेजी सेना को अपनी तरफ आकर्षित कर रखा था। ताकि दूसरी तरफ से रानी लक्ष्मीबाई सुरक्षित बाहर निकाल सके। इस तरह झलकारीबाई खुद को रानी बताते हुए लड़ती रही और जनरल रोज की सेना भी झलकारीबाई को ही रानी समझकर उन पर प्रहार करती रही, तब तक रानी लक्ष्मीबाई सुरक्षित झाँसी से निकल चुकी थी। सेमिनार के संरक्षक और प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि भारत की सम्पूर्ण आजादी के सपने को पूरा करने के लिए प्राणों का बलिदान करने वाली वीरांगना झलकारीबाई का नाम अब इतिहास के काले पन्नों से बाहर आकार पूर्ण चांद के समान चारों ओर अपनी आभा बिखेरने लगा है। भारत सरकार ने झलकारीबाई के नाम का पोस्ट और टेलीग्राम स्टेंप भी जारी किया है। इस विशेष सेमिनार में जितेन्द्र, सवीन, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. अजय कुमार, अजय सिंह और डॉ. राजपाल सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

रासीवासिया धर्मशाला में झांसी की रानी एक प्रेरणा ग्रुप द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मौजूद पदाधिकारी।

झांसी की रानी की मुख्य सेनापति झलकारी बाई का जन्म दिवस मनाया

चरखी दादरी| रासीवासिया धर्मशाला में झांसी की रानी एक प्रेरणा ग्रुप द्वारा झांसी की रानी की मुख्य सेनापति झलकारी बाई का जन्म दिवस मनाया गया। झांसी की रानी एक प्रेरणा ग्रुप की संयोजिका प्रियंका प्रजापति ने बताया कि झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की हमशकल मैं प्रखर योद्धा, वह सेनापति झलकारी बाई का जीवन हम सब के लिए प्रेरणादायक है। कार्यक्रम का मंच संचालन करते हुए मोनिका जांगड़ा द्वारा उपस्थित लड़कियों को देश प्रेम का पाठ पढ़ाते हुए कहा कि आजकल बेटियां किसी से कम नहीं है। आज लड़कियों को 50 आरक्षण भी मिल चुका है। लड़कियों को लड़कों के बराबर आगे बढ़ना होगा। झलकारी बाई और लक्ष्मी बाई ने तो पुरुष प्रधान समाज होते हुए भी आगे बढ़कर अपने राज्य की रक्षा की है। एकता ग्रेवाल ने उपस्थित सभी लड़कियों का कार्यक्रम में पहुंचने पर धन्यवाद किया। इस अवसर पर मोनिका, भारती, एकता, नीरू, मानसी, दिव्या, काजल, ओमा, ज्योति, लक्ष्मी आदि उपस्थित रही।

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 24-11-2021

खुद को रानी झांसी बताकर अंग्रेजों से लड़ती रही झलकारी बाई

भास्कर न्यूज | साल्हावास

स्वतंत्रता सेनानी झलकारी बाई के 191वें जन्मदिवस के अवसर पर विशेष सेमिनार का आयोजन

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी झलकारी बाई के 191वें जन्मदिवस के अवसर पर "झलकारी बाई और 1857 का स्वतंत्रता संग्राम" विषय पर विशेष विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि 1857 के महान संग्राम में झलकारी बाई ने वीरता और शौर्य का अद्भुत प्रदर्शन किया। रानी लक्ष्मीबाई को झांसी से सुरक्षित निकालने के लिए अदम्य साहस का प्रदर्शन किया। इस महान वीरांगना का जन्म 22 नवंबर 1830 को झांसी में हुआ था। झलकारी बाई के पति पूर्णसिंह झांसी की सेना में तोपची थे। वे एक साधारण सैनिक की तरह रानी लक्ष्मीबाई की सेना में शामिल हुई थी। लेकिन बाद में वह रानी लक्ष्मीबाई की विशेष सलाहकार एवं महिला सेना की सेनापति बनी और महत्वपूर्ण निर्णयों में भी भाग लेने लगी। डॉ. अमरदीप ने बताया कि 1857 के विद्रोह के समय जनरल रोज ने अपनी विशाल सेना के साथ 23 मार्च 1858 को झांसी पर आक्रमण किया। रानी ने वीरतापूर्वक अपने 5000 के सैन्य दल से उस विशाल सेना का सामना किया। रानी कालपी में पेशवा द्वारा सहायता की प्रतीक्षा कर रही थी,

1857 का स्वतंत्रता संग्राम" विषय पर सेमिनार में मौजूद विद्यार्थी।

लेकिन उन्हें कोई सहायता नहीं मिल सकी क्योंकि तात्या टोपे जनरल रोज से पराजित हो चुके थे। जल्द ही अंग्रेज फौज झांसी में घुस गयी थी और रानी अपनी झांसी को बचाने के लिए जी जान से लड़ रही थी। तभी झलकारीबाई ने रानी लक्ष्मीबाई के प्राणों को बचाने के लिए खुद को रानी बताते हुए लड़ने का फैसला किया, इस तरह झलकारीबाई ने पूरी अंग्रेजी सेना को अपनी तरफ आकर्षित कर रखा था। ताकि दूसरी तरफ से रानी लक्ष्मीबाई सुरक्षित बाहर निकाल सके। इस तरह झलकारीबाई खुद को रानी बताते हुए लड़ती रही और जनरल रोज की सेना भी झलकारीबाई को ही रानी समझकर उन पर प्रहार करती रही, तब तक रानी लक्ष्मीबाई सुरक्षित झांसी से निकल चुकी थी। भारत सरकार ने झलकारीबाई के नाम का पोस्ट और टेलीग्राम स्टेंप भी जारी किया है। इस विशेष सेमिनार में जितेन्द्र, सवीन, डॉ. नरेंद्र सिंह, संदीप कुमार, डॉ. अजय कुमार, अजय सिंह और डॉ. राजपाल सिंह उपस्थित रहे।

शिक्षा अधिकारी रोशन लाल मौजूद रहे।

अमर उजाला, चरखी दादरी 24.11.21

स्वतंत्रता सेनानी झलकारीबाई को किया नमन

स्वतंत्रता संग्राम में झलकारीबाई ने दिखाई अद्भुत वीरता : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्वतंत्रता सेनानी झलकारी बाई के 191वें जन्म दिवस के अवसर पर सेमिनार करवाया गया। सेमिनार का विषय झलकारी बाई और 1857 का स्वतंत्रता संग्राम रहा।

सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1857 के महान संग्राम में झलकारी बाई ने वीरता और शौर्य का अद्भुत प्रदर्शन किया। रानी लक्ष्मीबाई को झांसी से सुरक्षित निकालने के लिए अदम्य साहस का प्रदर्शन किया। इस महान वीरांगना का जन्म 22 नवंबर 1830 को झांसी में हुआ था। झलकारी बाई के पति पूर्णसिंह झांसी की सेना में तोपची थे। झलकारी बाई साधारण सैनिक थी। बाद में रानी लक्ष्मीबाई की विशेष सलाहकार एवं महिला सेना सेनापति बनी। डॉ. अमरदीप ने बताया कि 1857 के विद्रोह के समय जनरल रोज ने अपनी सेना के साथ 23 मार्च 1858 को झांसी

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में विद्यार्थियों को संबोधित करता वक्ता। विज्ञप्ति

पर आक्रमण किया। रानी ने वीरतापूर्वक अपने 5000 के सैन्य दल से उस सेना का सामना किया। रानी कालपी में पेशवा द्वारा सहायता की प्रतीक्षा कर रही थी, लेकिन उन्हें कोई सहायता नहीं मिल सकी। रानी अपनी झांसी को बचाने के लिए जी जान से लड़ रही थी, तभी झलकारीबाई ने रानी लक्ष्मीबाई के प्राणों को बचाने के लिये खुद को रानी बताते हुए लड़ने का फैसला किया। इस दौरान पूरी अंग्रेजी सेना का फोकस झलकारीबाई पर था। अंग्रेजी सेना भी झलकारीबाई को ही झांसी की रानी समझकर उन पर प्रहार करती रही और रानी लक्ष्मीबाई सुरक्षित झांसी से निकल चुकी थी। सेमिनार के संरक्षक और महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि वीरांगना झलकारीबाई का नाम अब इतिहास के काले पन्नों से बाहर आकर पूर्ण चांद के समान चारों ओर अपनी आभा बिखेरने लगा है।

44. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 140th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Sir Chhotu Ram on 25.11.2021 and delivered an expert lecture on "Sir Chhotu Ram: His Contribution in the Freedom Struggle".

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 26-11-2021

चौधरी सर छोटूराम के 140वें जन्मदिन के उपलक्ष्य पर सेमीनार का आयोजन

राजकीय कॉलेज में सेमिनार में मौजूद बच्चे और स्टाफ।

भास्कर न्यूज | साल्हावास

आजादी के अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं किसानों के मसीहा चौधरी सर छोटूराम के 140 वें जन्मदिन के उपलक्ष्य पर सेमीनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि सर छोटूराम ने किसानों को नई जान और उनकी आवाज को बुलंदी दी। जितना मान उन्हें रोहतक में हिन्दू किसानों से मिला उतनी ही इज्जत उन्हें लाहौर के मुसलमान किसानों ने बख्शी। मुसलमानों के रहबर-ए-आजम और हिन्दुओं के दीनबंधु सर छोटूराम का जन्म 1881 में झज्जर के छोटे से गांव गढ़ी सांपला में बहुत ही साधारण किसान परिवार में हुआ।

Dadri My City 26

अमर उजाला, चरखी दादरी 26.11.21

सर छोटूराम को जितना मान यहां मिला है उतना ही लाहौर में : अमरदीप

चरखी दादरी। बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग की ओर से छोटूराम की जयंती पर सेमिनार करवाया गया। सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि सर छोटूराम ने किसानों आवाज को बुलंद किया। जितना मान उन्हें यहां मिलती है, उतनी ही लाहौर में।

उन्होंने कहा कि सर छोटूराम का जन्म 1881 में झज्जर के छोटे से गांव गढ़ी सांपला में किसान परिवार में हुआ। छोटूराम की प्रारंभिक शिक्षा गांव के पास के स्कूल से हुई, लेकिन वे आगे पढ़ना चाहते थे। इसलिए उनके पिता साहूकार से कर्जा मांगने गए, लेकिन साहूकार ने उनका बहुत अपमान किया। अपने पिता के इस अपमान ने छोटूराम के मन में विद्रोह के बीज बो दिए। उन्होंने एक इसाई मिशनरी स्कूल में दाखिला ले लिया। वहां से उनके जीवन की पहली क्रांति की शुरुआत हुई। इस मौके पर डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह, सवीन, डॉ. नरेंद्र सिंह, जितेंद्र, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल आदि मौजूद रहे। संवाद

45. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 72nd Constitution Day on 26.11.2021 and delivered an expert lecture on "Meaning and Importance of Indian Constitution".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 27-11-2021

संविधान दिवस के उपलक्ष्य पर बिरोहड़ गांव में सेमीनार का आयोजन किया

भास्कर न्यूज | झज्जर आजादी

का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में 72 वें संविधान दिवस के उपलक्ष्य पर एक विशेष सेमीनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि भारतीय संविधान स्वतंत्रता, समानता और शांति का सन्देश देता है। संविधान के जनक डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने उन असंख्य भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान और संघर्ष को साकार रूप देते हुए एक ऐसे संविधान का निर्माण किया जिससे कमजोर से कमजोर व्यक्ति को भी उसका अस्तित्व और सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकारी माना जा सके। जिस अधिकार से औपनिवेशिक साम्राज्य ने हेमशा भारतीयों को वंचित रखा था।

डॉ. अमरदीप ने कहा कि हमें संविधान दिवस केवल संविधान बनाने के दिन के लिए नहीं मनाना चाहिए बल्कि इसके पीछे संघर्ष की गौरव गाथा को जन जन तक पहुंचाना और हमारी आने वाली पीढियों को हमारे देश के संविधान के महत्व को समझना भी हैं। आजादी के पहले तक भारत में रियासतों के अपने अलग-अलग नियम कानून थे और साथ साथ अंग्रेजी सरकार ने भी भारत पर अपना शासन शाश्वत रखने के लिए शोषणकारी कानून व्यवस्था बनाई हुई थी, जिसमे सर्वजन के लिए कोई स्थान नही था।

बेदखली सूचना

मैं, दिलबाग सिंह पुत्र जयनारायण निवासी पाना चौधरान, बादली तह. बादली जिला झज्जर अपने हल्फ से ब्यान करता हूँ कि मेरा लड़का जगदेव व उसकी पत्नी जसवन्ती उर्फ रीतु मेरे व मेरे परिवार के कहने-सुनने से बाहर हैं, इसलिए मैं इनको अपनी चल-अचल सम्पति से बेदखल करता हूं। भविष्य में इनके द्वारा किए गए अच्छे बुरे कार्यों व लेन देन व किसी प्रकार के कानूनी व गैर कानूनी कार्य के लिए वह स्वयं जिम्मेवार होगें। मेरी व मेरे परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

46. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 131st Mahaprinirvan Diwas of Great Freedom Fighter and Social Reformer Jyotiba Phule 27.11.2021 and delivered an expert lecture on "Contribution of Jyotiba Phule in the making of Modern India".

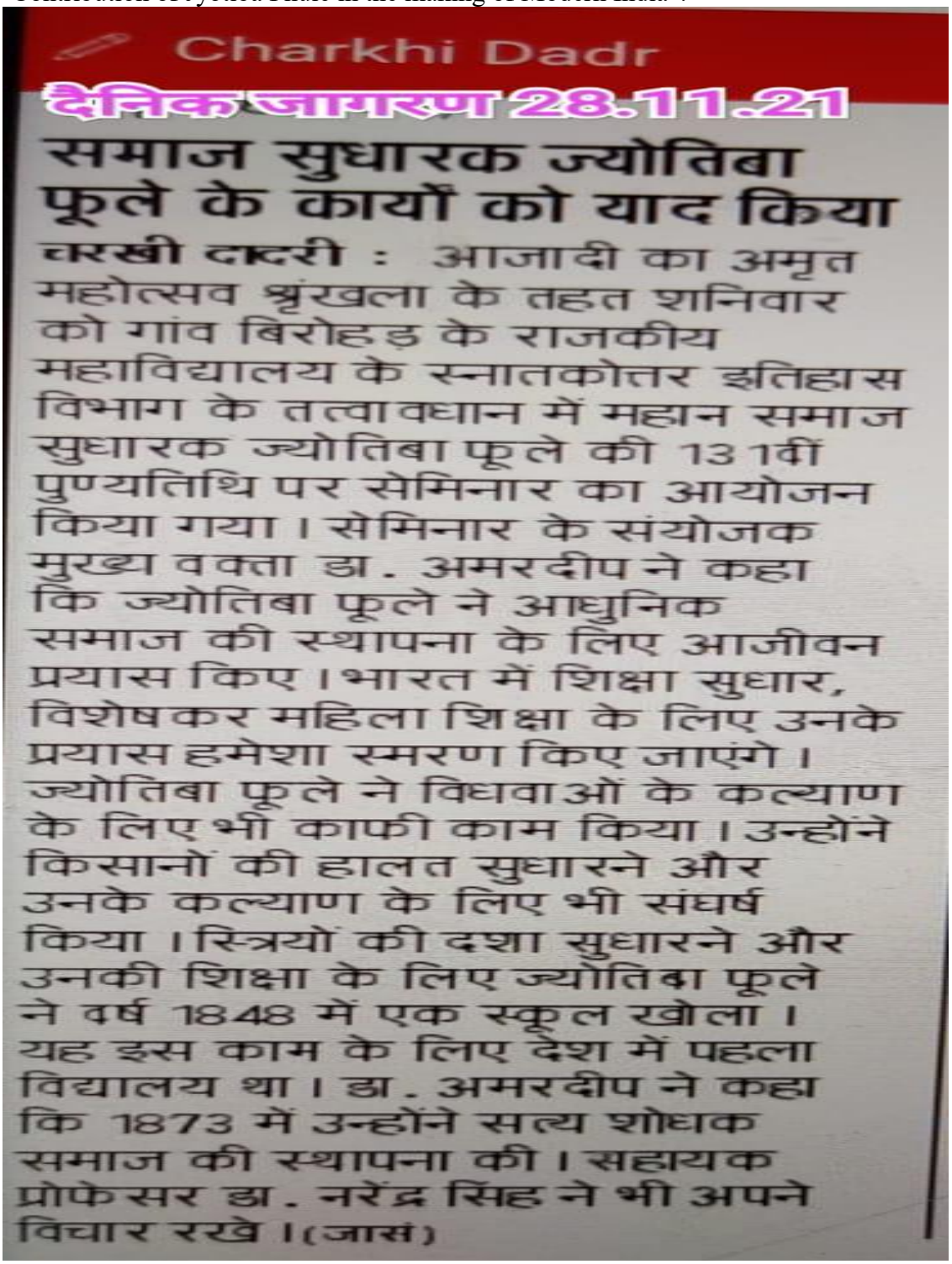

Charkhi Dadr

दैनिक जागरण 28.11.21

समाज सुधारक ज्योतिबा फूले के कार्यों को याद किया

चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत शनिवार को गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान समाज सुधारक ज्योतिबा फूले की 131वीं पुण्यतिथि पर सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि ज्योतिबा फूले ने आधुनिक समाज की स्थापना के लिए आजीवन प्रयास किए। भारत में शिक्षा सुधार, विशेषकर महिला शिक्षा के लिए उनके प्रयास हमेशा स्मरण किए जाएंगे। ज्योतिबा फूले ने विधवाओं के कल्याण के लिए भी काफी काम किया। उन्होंने किसानों की हालत सुधारने और उनके कल्याण के लिए भी संघर्ष किया। स्त्रियों की दशा सुधारने और उनकी शिक्षा के लिए ज्योतिबा फूले ने वर्ष 1848 में एक स्कूल खोला। यह इस काम के लिए देश में पहला विद्यालय था। डा. अमरदीप ने कहा कि 1873 में उन्होंने सत्य शोधक समाज की स्थापना की। सहायक प्रोफेसर डा. नरेंद्र सिंह ने भी अपने विचार रखे। (जासं)

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 28-11-2021

हिसार, रविवार, 28 नवंबर, 2021 | 4

बिरोहड़ में महान समाज सुधारक ज्योतिबा फुले को याद किया

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता।

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान समाज सुधारक ज्योतिबा फुले के 131वीं पुण्यतिथि पर सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि ज्योतिबा फुले ने आधुनिक समाज की स्थापना के लिए आजीवन प्रयास किये। भारत में शिक्षा सुधार, विशेषकर महिला शिक्षा के लिए उनके प्रयास हमेशा स्मरण किये जाएंगे। ज्योतिबा फुले का उनका जन्म 11 अप्रैल 1827 को सतारा, महाराष्ट्र, में हुआ था। उन्होंने विधवाओं और महिलाओं के कल्याण के लिए काफी काम किया। उन्होंने इसके साथ ही किसानों की हालत सुधारने और उनके कल्याण के लिए भी काफी प्रयास किये। स्त्रियों की दशा सुधारने और उनकी शिक्षा के लिए ज्योतिबा ने 1848 में एक स्कूल खोला।

यह इस काम के लिए देश में पहला विद्यालय था। महात्मा जोतिराव फुले इन्होंने भारत के इस सामाजिक आंदोलन से महराष्ट्र में नई दिशा दी। डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1873 में उन्होंने सत्य शोधक समाज की स्थापना की। वह इस संस्था के पहले कार्यकारी व्यवस्थापक तथा कोषपाल भी थे। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य समाज में शुद्रों पर हो रहे शोषण तथा दुर्व्यवहार पर अंकुश लगाना था। सहायक प्रोफेसर डॉ. नरेंद्र सिंह ने कहा कि ज्योतिबा फुले यह जानते थे कि देश व समाज की वास्तविक उन्नति तब तक नहीं हो सकती, जब तक देश का बच्चा-बच्चा जाति-पाति के बंधनों से मुक्त नहीं हो पाता, साथ ही देश की नारियां समाज के प्रत्येक क्षेत्र में समान अधिकार नहीं पा लेतीं। 28 नवंबर 1890 को ज्योतिबा फुले ने देह त्याग दिया और एक महान समाजसेवी इस दुनिया से विदा हो गया।

47. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 196th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Matadin Hela on 30.11.2021 and delivered an expert lecture on "Great War of Freedom Struggle and Unsung Hero: Matadin Hela".

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 01-12-2021

1857 के स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी जलाने वाले प्रथम व्यक्ति थे मातादीन

बिरोहड़ के गवर्नमेंट कॉलेज में स्वतंत्रता सेनानी के जन्म दिवस पर सेमिनार

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायक मातादीन हेला के 196वें जन्म दिवस पर सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि मातादीन हेला 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी जलाने वाले प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने मंगल पांडे को क्रांति के लिए ललकारा था।

राष्ट्र की संकल्पना में हर व्यक्ति की भागीदारी एवं हिस्सेदारी होती है, यही हमें 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में दिखाई पड़ता है जब हर समुदाय के लोग अंग्रेजों के खिलाफ लोहा ले रहे थे। डॉ. अमरदीप ने कहा कि अगर मातादीन भंगी नहीं होते तो चर्बी वाले कारतूसों की सूचना किसी को नही मिल पाती और न मंगल पांडे का विद्रोह होता और न 10 मई को इस महान क्रांति की शुरुआत हो

बिरोहड़ के गवर्नमेंट कॉलेज में कार्यक्रम में अपनी बात रखते वक्ता।

पाती। बैरकपुर छावनी में जहां चर्बी वाले कारतूस बनते थे, वही पर मातादीन ब्रिटिश नौकरी करते थे। जब मंगल पांडे से उनका पानी के लोटा मांगा, तो मातादीन ने उनको चेताया कि चर्बी वाले कारतूसों ने हिन्दू और मुसलमान दोनों का धर्म भ्रष्ट हो जाएगा, तब इस लोटा का क्या करोगे।

इसी घटना को कैप्टन राइट ने मेजर बॉटिन को 22 जनवरी 1857 को लिखे पत्र में भी उद्धृत किया था। मातादीन की इस जानकारी के बाद मंगल पांडे ने चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने से इंकार किया और 29 मार्च 1857 को विद्रोह कर दिया।

इस सेमिनार के संरक्षक और प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि इस विद्रोह की ज्वाला मातादीन से प्रारंभ होकर, मंगल पांडे से होती सारे भारत में फैल में गई। मंगल पांडे की ने जिन्होंने इस क्रांति की ज्वाला जलाई। इस विशेष सेमिनार में डॉ. नरेंद्र सिंह, पवित्रा देवी, जितेन्द्र, पवन कुमार, डॉ. अजय कुमार, अजय सिंह, डॉ. राजपाल सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

अमर उजाला, चरखी दादरी, 01.12.21

नायक मातादीन हेला नहीं होते तो चर्बी वाले कारतूसों की नहीं मिल पाती सूचना : डॉ. अमरदीप

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायक मातादीन हेला के 196 वें जन्मदिवस पर सेमिनार किया गया। सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि मातादीन हेला 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी जलाने वाले प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने मंगल पांडे को क्रांति के लिए ललकारा था। डॉ. अमरदीप ने कहा कि अगर मातादीन भंगी नहीं होते तो चर्बी वाले कारतूसों की सूचना किसी को नहीं मिल पाती। न मंगल पांडे का विद्रोह होता और न ही 10 मई को इस महान क्रांति की शुरुआत हो पाती। बैरकपुर छावनी में चर्बी वाले कारतूस बनते थे। मंगल पांडे ने चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने से इंकार किया और 29 मार्च 1857 को विद्रोह कर दिया। संवाद

स्वतंत्रता सेनानी

गुमनाम नायक के जन्मोत्सव पर बिरोहड़ कॉलेज में संगाष्ठी का आयोजन

स्वतंत्रता संग्राम की पहली चिंगारी जलाने वाले योद्धा थे हेला

अमर उजाला, झज्जर 01.12.21

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायक मातादीन हेला के 196 वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष सेमिनार का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि मातादीन हेला 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी जलाने वाले प्रथम व्यक्ति थे। उन्होंने मंगल पांडे को क्रांति के लिए ललकारा था। डॉ. अमरदीप ने कहा कि अगर मातादीन नही होते तो चर्बी वाले कारतूसों की सूचना किसी को नहीं मिल पाती और न विद्रोह होता । बैरकपुर छावनी में जहां चर्बी वाले कारतूस बनते थे, वहीं पर मातादीन ब्रिटिश नौकरी करते थे। जब मंगल पांडे से उनका पानी का लोटा मांगा, तो मातादीन ने उनको चेताया कि चर्बी वाले कारतूसों ने हिन्दू और मुसलमान दोनों का धर्म भ्रष्ट हो जाएगा, तब इस लोटे का क्या करोगे। इसी घटना को कैप्टन राइट ने मेजर बोंटिन को 22 जनवरी 1857 को लिखे पत्र में भी उद्धत किया था। मातादीन की इस जानकारी के बाद मंगल पांडे ने चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने से इंकार किया और 29 मार्च 1857 को विद्रोह कर दिया।

सेमिनार में जानकारी देते वक्ता। संवाद

इस सेमिनार के संरक्षक और महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि इस विद्रोह की ज्वाला मातादीन से प्रारम्भ होकर, मंगल पांडे से होती सारे भारत में फ़ैल में गई। इस विशेष सेमिनार में डॉ. नरेंद्र सिंह, संदीप कुमार पवित्रा देवी, जितेन्द्र, पवन कुमार, डॉ. अजय कुमार, अजय सिंह, डॉ. राजपाल सिंह आदि उपस्थित रहे।

48. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 65th Mahaparinirvan Diwas of Great Freedom Fighter & Social Reformer Baba Saheb Bharat Ratna Dr. Bhimrao Ambedkar on 06.12.2021 and delivered an expert lecture on "Contribution of Dr. Ambedkar in the Making of New India".

अमर उजाला, चरखी दादरी 7.12.21

बाबा साहब ने आजीवन राष्ट्रहित में किया कार्य : डॉ. अमरदीप

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस के अवसर पर सेमिनार करवाया गया। मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि डॉ. आंबेडकर अखंड एवं समतामूलक भारत के पैरोकार थे। उन्होंने आजीवन राष्ट्रहित में कार्य किया और श्रेष्ठ व सशक्त भारत के लिये निरंतर संघर्ष और आंदोलनरत रहे। एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अनिता रानी ने कहा कि आंबेडकर प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। इस अवसर पर गणित प्रो. डॉ. नरेंद्र सिंह, प्राचार्य राजकुमार वर्मा, डॉ. नरेंद्र सिंह, जितेंद्र, सवीन, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह व संदीप कुमार आदि उपस्थित रहे। संवाद

कॉलेज में छात्रों को जानकारी देते हुए। संवाद

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 07-12-2021

महापरिनिर्वाण दिवस पर बाबा साहेब को श्रद्धांजलि

चरखी दादरी| गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में संविधान निर्माता बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के 65वें महापरिनिर्वाण दिवस के अवसर पर सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि डॉ. अंबेडकर एक अखंड एवं समतामूलक भारत के पैरोकार थे। उन्होंने आजीवन राष्ट्रहित मे कार्य किया और एक श्रेष्ठ और सशक्त भारत के लिये निरंतर संघर्ष और आंदोलनरत रहे। डॉ अंबेडकर भली भाँति जानते थे कि राष्ट्र केवल कुछ वर्गों के विकास की कहानी नहीं है बल्कि प्रत्येक भारतीय की इसमें सक्रिय भागीदारी आवश्यक और उनके अनंत संघर्ष की गौरव गाथा है। डॉ. अंबेडकर ने भारत के कमजोर और शोषित वर्ग की मुक्ति के साथ साथ उनको राष्ट्र एवं समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए एक सशक्त अहिंसक आंदोलन चलाया। प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि डॉ. अंबेडकर एक महान त्यागी थे जिन्होंने संविधान सभा में हुंकार भरी थी कि भारत एक अखंड भारत एवं शक्तिशाली बनकर दुनिया में सबसे आगे निकल जाएगा। सेमिनार में डॉ. अनीता रानी, डॉ. नरेंद्र सिंह, जितेंद्र, सवीन, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह, संदीप कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

49. Dr. Amardeep organised a special tree plantation drive on 09.12.2021 on the 196th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Rao Tula Ram and planted tree on this occasion under आज़ादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम and described his contribution.

आयोजन

राजकीय महाविद्यालय में करवाया कार्यक्रम, स्वतंत्रता संग्राम में राव तुलाराम के योगदान को किया याद

स्वतंत्रता सेनानी तुलाराम की स्मृति में किया पौधरोपण

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी राव तुलाराम के जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान विद्यार्थियों व शिक्षकों ने कॉलेज परिसर में पौधरोपण करते हुए स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान का याद किया।

इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि राव तुलाराम 1857 के अद्वितीय योद्धा थे, जिन्होंने अंग्रेजों को नाको तले चने चबना दिए थे। इस महान स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने प्रदेश का प्रतिनिधि किया। इस महान संग्राम की शुरुआत मेरठ छावनी से न होकर बल्कि अंबाला छावनी से हुई थी, जिससे स्पष्ट होता है कि प्रदेश के वीर जवानों ने प्रारंभ से ही अंग्रेजी साम्राज्य को हिलाकर रख दिया था। भूगोल के सहायक प्रोफेसर पवन कुमार ने बताया कि अंग्रेजी सरकार लाख कोशिशों के बावजूद भी राव तुला राम को पकड़ नहीं पाई। इस महान योद्धा ने 23 सितंबर 1863 को काबुल में अंतिम सांस ली। कार्यक्रम में संदीप कुमार और सोमबीर का योगदान रहा।

राव तुलाराम की स्मृति में कॉलेज में पौधरोपण करते शिक्षक। विज्ञप्ति

अमर उजाला, चरखी दादरी 10.12.2021

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 10-12-2021

राव तुला राम के 196वें जन्मदिवस पर पौधरोपण किया

साल्हावास | आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धा राव तुला राम के 196 वें जन्मदिवस पर वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप, संदीप कुमार, अमरदीप और सोमबीर का योगदान रहा।

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 10-12-2021

बिरोहड़ के स्कूल में मनाई राव तुलाराम जयंती

राजकीय महाविद्यालय में विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धा राव तुलाराम के 196वें जन्मदिवस पर वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि राव तुला राम 1857 के अद्वितीय योद्धा थे जिन्होंने अंग्रेजों को नाको चने चबवा दिए थे। इस महान स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने हरियाणा का प्रतिनिधि किया। सहायक प्रोफेसर जितेन्द्र यादव ने कहा कि राव तुला राम ने अपने अद्भुत रणकौशल से अंग्रेजों को एक महीने से भी उलझाये रखा था। सहायक प्रोफेसर पवन कुमार ने बताया अंग्रेजी सरकार लाख कोशिशों के बावजूद भी राव तुला राम पकड़ नहीं पाई। इस विशेष कार्यक्रम में संदीप कुमार, अमरदीप और सोमबीर का विशेष योगदान रहा।

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में पौधरोपण करते कॉलेज स्टाफ।

50. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 133rd Birth Anniversary of Great Freedom Fighter & Revolutionary Prafulla Chaki on 10.12.2021 and delivered an expert lecture on "Contribution of Prafulla Chaki in Indian National Movement".

कार्यक्रम

स्वतंत्रता सेनानी प्रफुल्लचंद्र चाकी की जयंती पर बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में हुआ सेमिनार

प्रफुल्लचंद्र चाकी ने भी चंद्रशेखर आजाद की तरह दी थी शहादत : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी प्रफुल्लचंद्र चाकी के 133वें जन्मदिवस पर सेमिनार किया गया। सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने प्रफुल्लचंद्र चाकी के आजादी में योगदान पर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि भारत की आजादी के लिए मात्र 19 वर्ष की आयु में प्रफुल्लचंद्र चाकी सर्वोच्चबलिदान देकर युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत बने। ब्रिटिश साम्राज्यवाद का सशक्त विरोधकरने एवं प्रथम क्रांतिकारी आंदोलन के चमकते सितारे प्रफुल्लचंद्र चाकी का जन्म 10 दिसंबर 1888 को बंगाल में हुआ था। स्वामी विवेकानंद के स्वास्थ्य और बंगाल का विभाजन होने से उनके अंदर देश को स्वतंत्र करने की भावना विकसित हुई। नौवीं कक्षा के छात्र प्रफुल्ल ने स्वदेशी आंदोलन में भाग लिया और 'जुगांतर' पार्टी के संपर्क में आए।

डॉ. अमरदीप ने बताया कि ये वो दौर था जब ब्रिटिश अधिकारी किसी भी भारतीय नेता या फिर क्रांतिकारी को अपमानित करनेका कोई मौका नहीं छोड़ते थे और इनमे ऐसे ही क्रूर अधिकारियों की फेहरिस्त में कोलकाता का चीफ प्रेसिडेंसी मजिस्ट्रेटकिंग्सफोर्ड का नाम भी शामिल था। क्रांतिकारी नेताओं ने ब्रिटिश शोषण का जवाब देने और किंग्सफोर्ड को खत्म करने का काम खुदीराम बोस व प्रफुल्ल चाकी को सौंपा। 30 अप्रैल 1908 को किंग्सफोर्ड के यूरोपियन क्लब जाने की सूचना इन दोनों क्रांतिकारियों को मिली और किंग्सफोर्ड के क्लब से बाहर निकलते ही उसकी बग्गी पर बम फेंक दिया। हालांकि, खुदीराम और प्रफुल्ल को लगा कि उन्होंने किंग्सफोर्ड को मार दिया है, लेकिन उस बग्गी में किंग्सफोर्ड नहीं बल्कि अन्य दो ब्रिटिश महिलाएं बैठी हुई थीं जो इसमें मारी गई।

एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अनीता रानी ने कहा कि बम फेंकने के तुरंत बाद दोनों क्रांतिकारी घटनास्थल से निकलने में कामयाब रहे और प्रफुल्ल ने समस्तीपुर पहुंच कर कपड़े बदले और टिकट खरीद कर ट्रेन में बैठ गए। एमए इतिहास के छात्र गुरदीप ने बताया कि उसी डिब्बे में पुलिस सब-इंस्पेक्टर नंदलाल बनर्जी बैठा हुआ था और उसे प्रफुल्ल पर शक हुआ और उसने अगले स्टेशन पर सूचना भेजकर प्रफुल्ल को गिरफ्तार करने का प्रबंध कर लिया। स्टेशन पर जब प्रफुल्ल ने देखा कि वे चारों ओर से घिर गए हैं, तो उन्होंने अपनी रिवाल्वर से खुद कोकी गोली मारकर शहादत को वो मिसाल पेश की जैसी चंद्रशेखर आजाद ने दी थी। सेमिनार में बंसीलाल यूनिवर्सिटी और रोहतक यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलसचिव डॉ. जितेंद्र भारद्वाज, डॉ. अनीता रानी, सचिन, राजेश कुमार, ओमबीर, डॉ. अजय कुमार, अजय सिंह, डॉ. राजपाल सिंह, मृणाल, मोनिका, मंजू कुमारी आदि उपस्थित रहे।

सेमिनार में विचार रखते हुए डॉ. अमरदीप और मौजूद विद्यार्थी एवं शिक्षकगण।

51. Dr. Amardeep worked as convener and organised a special programme on 94th martyrdom of Great Freedom Fighters & Revolutionaries Ram Prasad Bismil, Ashgfaqullah Khan & Roshan Singh on 20.12.2021

under आजादी का अमृत महोत्सव programme and delivered an expert lecture on " Kakori Robbery Incidence and Its Importance in Indian History" Role of Sardar Udham Singh in Freedom Struggle.

दैनिक भास्कर चरखी दादरी 21-12-2021

भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का महत्वपूर्ण पड़ाव था काकोरी कांड

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाह खान व रोशन सिंह का 94वां शहीदी दिवस मनाया

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

बिरोहड़ के गवर्नमेंट कॉलेज में रामप्रसाद बिस्मिल,अशफाक़ उल्लाह खान, रोशन सिंह के शहीदी दिवस पर पौधारोपण करते हुए।

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी आंदोलन के चमकते सितारों रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्लाह खान, रोशन सिंह के 94वें शहीदी दिवस पर वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि 19 दिसंबर 1927 को गोरखपुर जेल में फांसी के वेदी पर रामप्रसाद बिस्मिल ने गरजकर कहा था कि हम ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहते है। इसी दिन फैजाबाद जेल में अशफाकउल्लाह खान को और रोशन सिंह को इलाहाबाद जेल में काकोरी कांड मे शामिल होने के कारण फांसी दी गई थी। डॉ. अमरदीप ने कहा कि काकोरी कांड भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का महत्वपूर्ण पड़ाव था। जिस प्रकार अंग्रेजों का भारत को जीतने के लिए भारतीय संसाधनों और पैसों का प्रयोग किया था अब क्रांतिकारी भी अंग्रेजी दौलत लूटकर भारत को आजाद करवाना चाहते थे। इसीलिए 9 अगस्त 1925 को क्रांतिकारियों ने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में काकोरी में एक ट्रेन में डकैती डाली थी। सहायक प्रोफेसर जितेंद्र यादव ने कहा कि इस ट्रेन डकैती में कुल 4601 रुपये लूटे गए थे। इस लूट का विवरण देते हुए लखनऊ के पुलिस कप्तान मि. इंग्लिश ने 11 अगस्त 1925 को कहा, 'डकैत (क्रांतिकारी) खाकी कमीज और हाफ पैंट पहने हुए थे। उनकी संख्या 25 थी। यह सब पढ़े-लिखे लग रहे थे। पिस्तौल में जो कारतूस मिले थे, वे वैसे ही थे जैसे बंगाल की राजनीतिक क्रांतिकारी घटनाओं में प्रयुक्त किए गए थे।' महाविद्यालय के बर्सर डॉ. नरेंद्र सिंह ने बताया कि इस घटना के बाद देश में 40 से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार किया गया। सहायक प्रोफेसर पवन कुमार ने बताया कि काकोरी कांड का ऐतिहासिक मुकदमा 10 महीने तक लखनऊ की अदालत रिंग थियेटर में चला (आजकल इस भवन में लखनऊ का प्रधान डाकघर है.)। प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि इस मुकदमे में रामप्रसाद 'बिस्मिल', राजेंद्रनाथ लाहिड़ी, रोशन सिंह और अशफाक उल्ला खां को फांसी की सजा सुनाई गई। शचींद्र नाथ सान्याल को काले पानी और मन्मथ नाथ गुप्त को 14 साल की सजा हुई। योगेश चंद्र चटर्जी, मुकंदीलाल, गोविंद चरणकर, राजकुमार सिंह, रामकृष्ण खत्री को 10-10 साल की सजा हुई। विष्णुशरण दुब्लिश और सुरेशचंद्र भट्टाचार्य को सात और भूपेंद्रनाथ, रामदुलारे त्रिवेदी और प्रेमकिशन खन्ना को पांच-पांच साल की सजा हुई। परंतु इसके बावजूद आंदोलन थमा नहीं।

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 21-12-2021

94वें शहीदी दिवस पर विशेष वृक्षारोपण किया

सात्हावास | आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में क्रांतिकारी आन्दोलन के चमकते सितारों रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, रोशन सिंह के 94वें शहीदी दिवस पर वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक एवम इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप रहे। इस दौरान प्राचार्य राजकुमार वर्मा, डॉ. नरेंद्र सिंह, भूगोल के सहायक प्रोफेसर पवन कुमार, जितेन्द्र, डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार और अमरदीप उपस्थित रहे।

अमर उजाला, चरखी दादरी 21.12.21

आयोजन | बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में करवाया कार्यक्रम, क्रांतिकारियों के जीवन की दी जानकारी

स्वतंत्रता संग्राम का महत्वपूर्ण पड़ाव था काकोरी कांड : डॉ अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, रोशन सिंह के 94वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम करवाया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने विद्यार्थियों को काकोरी कांड का जानकारी दी

उन्होंने बताया कि काकोरी कांड भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का महत्वपूर्ण पड़ाव था। अंग्रेजों ने भारत को जितने के लिए जिस प्रकार भारतीय संसाधनों और पैसों का इस्तेमाल किया था, क्रांतिकारी भी अंग्रेजी दौलत को लूटकर भारत को आजाद करवाना चाहते थे। इसीलिए नौ अगस्त 1925 को क्रांतिकारियों ने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में काकोरी में एक ट्रेन में डकैती डाली थी।

इतिहास के सहायक प्रोफेसर जितेंद्र यादव ने कहा कि ट्रेन डकैती में 4601 रुपये लूटे गए थे। इस लूट का विवरण देते हुए लखनऊ के पुलिस कप्तान ने 11 अगस्त 1925 को बताया कि डकैत क्रांतिकारी खाकी कमीज और हाफ पैंट पहने हुए थे। इनकी संख्या 25 थी। यह सब पढ़े लिखे दिख रहे थे। पिस्तौल में जो कारतूस मिले थे, वे वैसे ही थे जैसे बंगाल की राजनीतिक क्रांतिकारी घटनाओं में प्रयुक्त किए गए थे। भूगोल के सहायक प्रोफेसर पवन कुमार ने बताया कि काकोरी कांड का ऐतिहासिक मुकदमा करीब 10 महीने तक लखनऊ की अदालत रिंग थियेटर में चला।

कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि इस मुकदमे में रामप्रसाद बिस्मिल, राजेंद्रनाथ, रोशन सिंह और अशफाक उल्ला खां को फांसी की सजा सुनाई गई। सच्चिंद्रनाथ सान्याल को कालेपानी और मन्मथनाथ गुप्त को 14 साल की सजा हुई। योगेशचंद्र चटर्जी, मुकंदीलाल, गोविंद चरणकर, राजकुमार सिंह, रामकृष्ण खत्री को 10-10 साल की सजा हुई। विष्णुशरण दुब्लिश और सुरेशचंद्र भट्टाचार्य को सात तथा भूपेंद्रनाथ, रामदुलारे त्रिवेदी और प्रेमकिशन खन्ना को पांच पांच साल की सजा सुनाई गई। उन्होंने कहा कि 19 दिसंबर 1927 को गोरखपुर जेल में फांसी के वक्त रामप्रसाद बिस्मिल ने गरजकर कहा था कि हम ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहते है। इसी दिन फैजाबाद जेल में अशफाक उल्ला खान और रोशन सिंह को इलाहाबाद जेल में काकोरी कांड में शामिल होने के आरोप में फांसी दी गई थी।

डॉ. नरेंद्र सिंह ने बताया कि इस घटना के बाद देश के कई हिस्सों में बड़े स्तर पर गिरफ्तारियां हुई और 40 से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार किया गया। कार्यक्रम में जितेंद्र, डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार और अमरदीप आदि उपस्थित रहे।

नमन शहीदों को | बिस्मिल, अशफाक के शहीदी दिवस पर विस्तृत व्याख्यान का आयोजन

क्रांतिकारी आंदोलन का अहम पड़ाव था काकोरी कांड

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, रोशन सिंह के 94 वें शहीदी दिवस पर विस्तृत व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक व इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि 19 दिसंबर 1927 को गोरखपुर जेल में फांसी की वेदी पर रामप्रसाद बिस्मिल ने गरजकर कहा था कि हम ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहते हैं। इसी दिन फैजाबाद जेल में अशफाक उल्ला खान को और रोशन सिंह को इलाहाबाद जेल में काकोरी कांड में शामिल होने के कारण फांसी दी गई थी। डॉ. अमरदीप ने कहा कि काकोरी कांड भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का महत्वपूर्ण पड़ाव था। जिसने क्रांतिकारी आंदोलन को नए तेवर प्रदान किए। जिस प्रकार अंग्रेजों ने भारत को जीतने के लिए जिस प्रकार भारतीय संस्थानों और पैसों का प्रयोग किया था, अब क्रांतिकारी भी अंग्रेजी दौलत को लूटकर भारत को आजाद करवाना चाहते थे। इसीलिए 9 अगस्त 1925 को क्रांतिकारियों ने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में काकोरी में एक ट्रेन में डकैती डाली थी। इतिहास के सहायक प्रोफेसर जितेंद्र यादव ने कहा कि इस ट्रेन डकैती में कुल 4601 रुपये लूटे गए थे। इस लूट का विवरण देते हुए लखनऊ के पुलिस कप्तान इंग्लिश ने 11 अगस्त 1925 को कहा, डकैत (क्रांतिकारी) खाकी कमीज और हाफ पैंट पहने हुए थे। उनकी संख्या 25 थी। यह सब पढ़े-लिखे लग रहे थे। पिस्तौल में जो कारतूस मिले थे, वे वैसे ही थे जैसे बंगाल की राजनीतिक क्रांतिकारी घटनाओं में प्रयुक्त किए गए थे। डॉ. नरेंद्र सिंह ने बताया कि इस घटना के बाद देश के कई हिस्सों में बड़े स्तर पर गिरफ्तारियां हुई और 40 से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार किया गया।

भूगोल के सहायक प्रोफेसर पवन कुमार ने बताया कि काकोरी कांड का ऐतिहासिक मुकदमा लगभग 10 महीने तक लखनऊ की अदालत रिंग थिएटर में चला (आजकल इस भवन में लखनऊ का प्रधान डाकघर है)। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि इस मुकदमे में रामप्रसाद बिस्मिल, राजेंद्र नाथ लाहिड़ी, रोशन सिंह और अशफाक उल्ला खां को फांसी की सजा सुनाई गई। शचींद्रनाथ सान्याल को काला पानी और मन्मथनाथ गुप्त को 14 साल की सजा हुई।

कॉलेज में व्याख्यान देते अतिथि। संवाद

बिस्मिल, अशफाक, राजेंद्र और रोशन को किया याद

बहादुरगढ़। शहीद राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, राजेंद्र सिंह और रोशन सिंह का शहीदी दिवस एआईडीवाईओ के कार्यकर्ताओं ने बड़े आदर और श्रद्धा के साथ मनाया। उनके चित्रों पर माल्यार्पण किया और उनसे प्रेरणा लेने का संकल्प लिया। संगठन की स्थानीय इकाई के सचिव लालजी ने कहा कि जिन आदर्शों को लेकर, जिन विचारों को लेकर और जिस उद्देश्य के लिए क्रांतिकारी वीरों ने अपने जीवन का सर्वोत्तम बलिदान दिया था, उनके वे सपने अभी अधूरे हैं। शोषण पर आधारित व्यवस्था ने अंग्रेजी राज से भी बुरी अवस्था में मेहनतकश जनता विशेषकर किसानों, मजदूरों, युवकों तथा अन्य गरीबों को धकेल दिया है। यदि अपनी बदहाली-दुर्दशा के खिलाफ कोई तबका आवाज उठाता है, तो उन्हें राष्ट्र विरोधी-देशद्रोही करार देकर तरह-तरह की यातनाएं दी जाती हैं। संघर्षों से मिले जनवादी अधिकारों को छीना जा रहा है। उन्होंने कहा कि आज देश में भयंकर बेरोजगारी है। 20 करोड़ से अधिक पढ़े लिखे युवा रोजगार के लिए सड़कों पर धक्के खा रहे हैं। संवाद

अमर उजाला, झज्जर 21.12.21

52. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 190th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer & India's First Female Teacher Savitribai Phule 03.01.2022 and delivered an expert lecture on "Contribution of Savitribai Phule in Education and Social Reform arena".

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 04-01-2022

चरखी दादरी

ज्योतिबा फुले को रुढ़िवादी समाज का उत्पीड़न सहने के साथ छोड़ना पड़ा था घर

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में फुले के जन्मदिवस के अवसर पर सेमिनार का आयोजन

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में आधुनिक भारत की प्रथम शिक्षिका सावित्रीबाई फुले के 190 वें जन्मदिवस के अवसर पर एक ऑनलाइन सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि सावित्रीबाई फुले ने आजीवन शिक्षा की ज्योति जलाकर सामाजिक बुराइयों का विनाश करते हुए आधुनिक समतामूलक समाज की स्थापना में अखंड एवं अमूल्य योगदान दिया।

3 जनवरी 1831 में देश की पहली महिला टीचर सावित्रीबाई फुले का जन्म महाराष्ट्र के सतारा के नयागांव में एक किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने में अहम भूमिका निभाई और भारत में महिला शिक्षा की अगुआ बनीं। औपनिवेशिक भारत में लड़कियों की शिक्षा के लिए पहला विद्यालय 1948 में पुणे में सावित्रीबाई और उनके पति ज्योतिबाफुले ने खोला था। इस विद्यालय की स्थापना के लिए सावित्रीबाई और ज्योतिबा फुले को ने केवल रुढ़िवादी समाज का उत्पीड़न सहना पड़ा बल्कि अपना घर भी छोड़ना पड़ा। परन्तु समाज सुधार की गति रुकने की बजाय तेज हुई और इन्होंने लड़कियों के 17 विद्यालय और खोले।

इस सेमिनार के मुख्य वक्ता राजकीय महाविद्यालय रेवाड़ी से डॉ. कर्मवीर सिंह ने कहा कि सावित्रीबाई फुले ने अपने विद्यालयों में पैरेंट्स टीचर मीटिंग, छात्रवृतियों की शुरुआत करके आधुनिक शिक्षा प्रणाली की नींव भी रखी थी जो आजकल 21वीं सदी में आजकल सर्वव्याप्त है। इसके साथ साथ इन्होंने नाइट स्कूल भी शुरू किये। जिससे शिक्षा के प्रसार और समाज सुधार को व्यापक गति मिली। प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि सावित्रीबाई न केवल महिलाओं के अधिकारों के लिए ही काम नहीं किया बल्कि वह समाज में व्याप्त भ्रष्ट जाति प्रथा के खिलाफ भी लड़ीं। जाति प्रथा को खत्म करने के अपने जुनून के तहत उन्होंने अछूतों के लिए अपने घर में एक कुआं बनवाया था। सावित्रीबाई न केवल एक समाज सुधारक थीं बल्कि वह एक दार्शनिक और कवयित्री भी थीं।

उनकी कविताएं अधिकतर प्रकृति, शिक्षा और जाति प्रथा को खत्म करने पर केंद्रित होती थीं। 1897 में पुणे में प्लेग फैला था और इसी महामारी में स्वयंसेवा करते हुए से 66 वर्ष की उम्र में सावित्रीबाई फुले का 10 मार्च 1897 को पुणे में निधन हो गया था। इस विशेष सेमिनार में राजेश कुमार, डॉ. अनीता रानी, पवनकुमार, डॉ. नरेन्द्रसिंह, सवीन, जितेन्द्र, नरेंद्र कुमार, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल गुलिया इत्यादि उपस्थित रहे।

सावित्री फुले ने जलाई शिक्षा की ज्योति : डा. अमरदीप

जासं, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत सोमवार को गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान समाज सुधारक एवं आधुनिक भारत की प्रथम शिक्षिका सावित्री बाई फुले के 190वें जन्मदिवस पर आनलाइन सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमीनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि सावित्री बाई फूले ने आजीवन शिक्षा की ज्योति जलाकर सामाजिक बुराइयों का विनाश किया। उन्होंने आधुनिक समतामूलक समाज की स्थापना में अमूल्य योगदान दिया। 3 जनवरी 1831 में देश की पहली महिला शिक्षिका सावित्री बाई फूले का जन्म महाराष्ट्र सतारा में हुआ था। सेमीनार में राजेश कुमार, डा. अनिता रानी, पवन कुमार, डा. नरेंद्र सिंह, सवीन, जितेंद्र, नरेंद्र कुमार, डा. अजय कुमारउपस्थित रहे।

दै. जागरण, चरखी दादरी

मौके पर रघबीर नंबरदार, देवेंद्र, दारा सिंह आदि ने विजेताओं को बधाई दी।

अमर उजाला, चरखी दादरी 04.01.22

महिलाओं की स्थिति सुधार में सावित्री बाई की भूमिका अहम : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में सावित्री बाई फुले की जयंती पर करवाया सेमिनार

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में देश प्रथम शिक्षिका सावित्री बाई फुले की जयंती पर ऑनलाइन सेमिनार करवाया गया।

इतिहास विभागाध्यक्ष मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि सावित्रीबाई फुले ने आजीवन शिक्षा की ज्योति जलाकर सामाजिक बुराइयों का विनाश करते हुए आधुनिक समतामूलक समाज की स्थापना में अमूल्य योगदान दिया। उन्होंने महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने में अहम भूमिका निभाई और भारत में महिला शिक्षा की अगुआ बनीं। औपनिवेशिक देश में लड़कियों की शिक्षा के लिए पहला विद्यालय 1948 में पुणे में सावित्री बाई और उनके पति ज्योतिबा फुले ने खोला था। इस विद्यालय की स्थापना के लिए सावित्रीबाई और ज्योतिबा फुले को ने केवल रूढ़िवादी समाज का उत्पीड़न सहना पड़ा, बल्कि अपना घर भी छोड़ना पड़ा। उन्होंने लड़कियों के 17 विद्यालय और खोले। राजकीय महाविद्यालय रेवाड़ी से डॉ. कर्मवीर सिंह ने कहा कि सावित्रीबाई फुले ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली की नींव भी रखी थी। इसके साथ साथ उन्होंने नाइट स्कूल भी शुरू किये, जिससे शिक्षा के प्रसार और समाज सुधार को व्यापक गति मिली।

प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि सावित्री बाई ने केवल महिलाओं के अधिकारों के लिए ही काम नहीं किया, बल्कि वह समाज में व्याप्त जाति प्रथा के खिलाफ भी लड़ी। जाति प्रथा को खत्म करने के अपने जुनून के तहत उन्होंने अछूतों के लिए अपने घर में कुआं भी बनवाया था। सावित्री बाई न केवल समाज सुधारक थी बल्कि वह एक दार्शनिक और कवयित्री भी थी। उनकी कविताएं अधिकतर प्रकृति, शिक्षा और जाति प्रथा को खत्म करने पर केंद्रित होती थी। राजकुमार ने कहा कि 1897 में पुणे में प्लेग फैला था और इसी महामारी में स्वयं सेवा करते हुए से 66 वर्ष की उम्र में सावित्री बाई फुले का 10 मार्च 1897 को पुणे में निधन हो गया था। सेमिनार में राजेश कुमार, डॉ. अनीता रानी, पवन कुमार, डॉ. नरेंद्र सिंह, सवीन, जितेंद्र, नरेंद्र कुमार, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल गुलिया शामिल हुए।

53. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 153rd Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Bhagwan Das on 12.01.2022 and delivered an expert lecture on “Role of Bhagwan in Development of Education and Indian philosophy.

13.01.2022 02

com

अमर उजाला चरखी दादरी

भगवानदास ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद का डटकर किया विरोध : अमरदीप

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भगवान दास के 153वें जन्म दिवस के अवसर पर ऑनलाइन सेमिनार आयोजित किया गया।

सेमिनार के संयोजक एवं मुख्य वक्ता इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि भगवान दास समाज सुधारक, शिक्षाशास्त्री और दार्शनिक थे। जिन्होंने न केवल अंग्रेजी साम्राज्यवाद का विरोध किया बल्कि समाज सुधार के साथ साथ भारतीय दर्शन को भी प्रचारित किया। सेमिनार के अध्यक्ष एवं प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि आजादी के पश्चात इनके कार्यों एवं उपलब्धियों को देखते हुए 1955 में भारत रत्न की सर्वोच्च उपाधि से विभूषित किया गया। इस दौरान राजेश कुमार, डॉ. अनिता रानी, ओमबीर, सवीन, जितेंद्र, राजेश कुमार, निशा रानी, शिवांशी शर्मा, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल गुलिया आदि उपस्थित रहे। संवाद

54. Dr. Amardeep worked as Convener and organised special programme on 159th Birth Anniversary of Swami Vivekananda from 12.01.2022 to 18.01.2022 under the joint aegis of Placement Cell and History Dept.

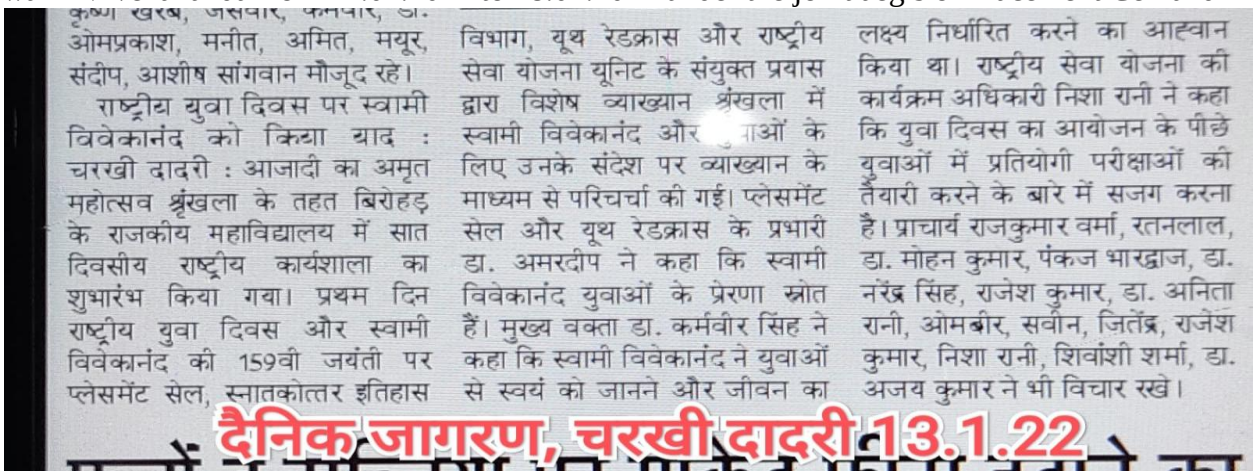

ओमप्रकाश, मनीत, अमित, मयूर, संदीप, आशीष सांगवान मौजूद रहे।

राष्ट्रीय युवा दिवस पर स्वामी विवेकानंद को किया याद : चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। प्रथम दिन राष्ट्रीय युवा दिवस और स्वामी विवेकानंद की 159वीं जयंती पर प्लेसमेंट सेल, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, यूथ रेडक्रास और राष्ट्रीय सेवा योजना यूनिट के संयुक्त प्रयास द्वारा विशेष व्याख्यान श्रृंखला में स्वामी विवेकानंद और [illegible]ओं के लिए उनके संदेश पर व्याख्यान के माध्यम से परिचर्चा की गई। प्लेसमेंट सेल और यूथ रेडक्रास के प्रभारी डा. अमरदीप ने कहा कि स्वामी विवेकानंद युवाओं के प्रेरणा स्रोत हैं। मुख्य वक्ता डा. कर्मवीर सिंह ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने युवाओं से स्वयं को जानने और जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने का आह्वान किया था। राष्ट्रीय सेवा योजना की कार्यक्रम अधिकारी निशा रानी ने कहा कि युवा दिवस का आयोजन के पीछे युवाओं में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने के बारे में सजग करना है। प्राचार्य राजकुमार वर्मा, रतनलाल, डा. मोहन कुमार, पंकज भारद्वाज, डा. नरेंद्र सिंह, राजेश कुमार, डा. अनिता रानी, ओमबीर, सवीन, जितेंद्र, राजेश कुमार, निशा रानी, शिवांशी शर्मा, डा. अजय कुमार ने भी विचार रखे।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 13.1.22

,

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 13-01-2022

स्वामी विवेकानंद के विचार व जीवन दर्शन आज भी प्रासंगिक

बिरोहड़ स्कूल में आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के प्लेसमेंट सेल के तत्वावधान में सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के प्रथम दिवस पर राष्ट्रीय युवा दिवस और स्वामी विवेकानंद की 159 वी जयंती पर विशेष व्याख्यान शृंखला में स्वामी विवेकानंद और युवाओं के लिए उनके सन्देश पर व्याख्यान के माध्यम से परिचर्चा की गई।

प्लेसमेंट सेल और यूथ रेडक्रॉस के प्रभारी डॉ अमरदीप ने कहा कि स्वामी विवेकानंद युवाओं के प्रेरणा स्रोत हैं और स्वामी विवेकानंद के विचार, उनका जीवन दर्शन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान था। इस कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. कर्मवीर सिंह, राजकीय महाविद्यालय रेवाड़ी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को स्वयं को जानने और जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने का आह्वान किया था। जो आज भी उतना ही सार्थक है। राष्ट्र के निर्माण में युवाओं का योगदान सबसे अधिक होता है इसलिए युवाओं को अपने जीवन को एक प्रतियोगिता के रूप में ग्रहण करना चाहिए और अपनी असीम उर्जा को पहचानते हुए सकारात्मक दृष्टि के साथ समाज और संस्कृति संस्कृति का नव निर्माण करना चाहिए। कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रीय सेवा योजना की कार्यक्रम अधिकारी निशा रानी ने कहा ने सभी वक्ताओं और प्रतिभागियों के धन्यवाद करते हुए कहा कि युवा दिवस का आयोजन करने के पीछे युवाओं में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने के बारे में सजग करना है। इस राष्ट्रीय कार्यशाला के संरक्षक और महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि युवाओं और स्वामी विवेकानंद के बीच गहरा संबंध है यह संबंध ऊर्जा और आनंद का स्रोत है जिसमें राष्ट्र का विकास छिपा हुआ है। इस कार्यक्रम में रतन लाल, डॉ. मोहन कुमार, पंकज भारद्वाज, डॉ. नरेंद्र सिंह, राजेश कुमार, डॉ.अनीता रानी, ओमबीर, सवीन, जितेन्द्र, राजेश कुमार, निशा रानी, शिवांशी शर्मा, डॉ.अजय कुमार इत्यादि समस्त स्टाफ मौजूद था।

55. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 13tth Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer Mangu Ram on 15.01.2022 and delivered an expert lecture on "Contribution of Mangu Ram in Freedom Struggle and Rise of Adh Dharm Movement".

करने की मांग करेंगे। संवाद

उन्होंने ग्रामीणों को बताया कि वैक्सीन रैली के दौरान एनएसएस पीओ

अमर उजाला, चरखी दादरी 16.1.22

मंगूराम का था अमेरिका से हथियार लाने का जिम्मा

संवाद न्यूज एजेंसी

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग में ऑनलाइन सेमिनार आयोजित

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सुधारक मंगूराम के 136 वें जन्म दिवस के अवसर पर ऑनलाइन सेमिनार आयोजित किया गया।

सेमिनार के संयोजक एवं मुख्य वक्ता इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि बाबू मंगूराम मुगोवालिया सामाजिक क्रांति के पुरोधा थे। मंगूराम अमेरिका जाकर गदर पार्टी के महत्वपूर्ण सदस्य बने। वह गदर पार्टी के पांच सदस्यों में से एक थे, जिन्हें ब्रिटिश शासन के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह के लिए भारत में हथियार लाने का कठिन कार्य सौंपा गया था, लेकिन हथियारों के परिवहन के लिए खरीदा गया जहाज एसएस मावेरिक रास्ते में पकड़ा गया और मंगूराम ने फिलीपींस में 12 साल गुप्त रूप से बिताए। सेमिनार के संरक्षक एवं महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि पंजाब के लिए मंगूराम मुगोवालिया का वही स्थान है जो महाराष्ट्र के लिए महात्मा जोतिराव फुले का है। सेमिनार में डॉ. अनिता रानी, संदीप कुमार, पवन कुमार, निशा रानी, शिवांशी शर्मा, रश्मि, डॉ. सितु सिंह, डॉ. अजय कुमार, प्रदीप कुमार ने विचार रखे।

फांसी की अफवाहों के बीच गांव पहुंचे थे मंगूराम

अंततः 1925 में मंगूराम अपने पैतृक गांव लौटे तो सबको आश्चर्यचकित कर दिया, क्योंकि उनकी कथित फांसी की अफवाहें उनके सामने आ चुकी थीं। भारत में आने के बाद उन्होंने सामाजिक समानता के लिए पंजाब में अधर्म आंदोलन चलाया, जो हर प्रकार के भेदभाव, जाति व्यवस्था, अन्धविश्वास को समूल नष्ट करना चाहता था। अमेरिका में अपने क्रांतिकारी ग़दरवादी नेतृत्व के नक्शेकदम पर चलते हुए उन्होंने भारत में संपूर्ण सामाजिक स्वतंत्रता और भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए जाति आधारित सामाजिक बुराई के खिलाफ बड़ा आंदोलन चलाया।

दैनिक जागरण, झज्जर 16.1.2022

बाबू मंगू राम के जन्मोत्सव पर सेमिनार आयोजित

संवाद सूत्र, साल्हावास : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक बाबू मंगू राम के 136 वें जन्मदिवस पर आनलाइन सेमीनार का आयोजन किया गया।

सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि बाबू मंगू राम मुगोवालिया सामाजिक क्रांति के पुरोधा थे।

1886 में जन्मे बाबू मंगू राम अमेरिका जाकर गदर पार्टी के महत्वपूर्ण सदस्य बने। वे एक गदर पार्टी के पांच सदस्यों में से एक थे, जिन्हें ब्रिटिश शासन के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह के लिए भारत में हथियार लाने का कठिन कार्य सौंपा गया था। लेकिन हथियारों के परिवहन के लिए खरीदा गया, जहाज एसएस मावेरिक रास्ते में पकड़ा गया और मंगू राम ने फिलिपींस में 12 साल गुप्त रूप से बिताए। जब वे 1925 में अपने पैतृक गांव लौटे तो सभी को आश्चर्यचकित कर दिया, क्योंकि उनकी कथित फांसी की अफवाहें उनके सामने आ चुकी थीं। भारत में आने के बाद उन्होंने सामाजिक समानता के लिए पंजाब में अध-धर्म आंदोलन चलाया।

सेमिनार के संरक्षक और महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि पंजाब के लिए बाबू मंगू राम मुगोवालिया का वही स्थान हैं जो महाराष्ट्र के लिए महात्मा जोतिराव फुले का है। सेमिनार में डा. अनीता रानी, संदीप कुमार, पवन कुमार, निशा रानी, शिवांशी शर्मा, रश्मि, डा. सितु सिंह, डा. अजय कुमार, प्रदीप कुमार आदि उपस्थित रहे।

56. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 180th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer Mahadeva Govind Ranade 18.01.2022 and delivered an expert lecture on "Socio-Political Movement in Colonial India and Contribution of Mahadeva Govind Ranade".

स्वदेशी वस्तुओं का इस्तेमाल करने के पक्षधर थे गोविंद रानाडे : अमरदीप

अमर उजाला, चरखी दादरी 19.1.2022

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सुधारक महादेव गोविंद रानाडे की जयंती पर ऑनलाइन सेमिनार आयोजित किया गया। सेमिनार के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि महादेव गोविंद रानाडे को महाराष्ट्र का सुकरात कहा जाता है।

वे देश के प्रसिद्ध राष्ट्रवादी, समाज सुधारक व विद्वान थे। प्रार्थना समाज, आर्य समाज और ब्रह्मा समाज का इनके जीवन पर बहुत प्रभाव था। रानाडे स्वदेशी के समर्थक और देश में ही निर्मित वस्तुओं का प्रयोग करने के पक्षधर थे। देश की आजादी दिलवाने और अंग्रेजी शासन को समाप्त करने जैसे महान उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उन्होंने अपना सर्वस्य त्याग कर दिया था। डॉ. अमरदीप ने कहा कि महादेव गोविंद रानाडे ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का समर्थन किया था और 1885 के उसके प्रथम मुंबई अधिवेशन में भाग भी लिया। राजनीतिक सम्मेलनों के साथ सामाजिक सम्मेलनों के आयोजन का श्रेय उन्हीं को जाता है। प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि गोविंद मानते थे कि मनुष्य की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक प्रगति एक दूसरे पर आश्रित है। इसलिए ऐसा व्यापक सुधारवादी आंदोलन होना चाहिए, जो मनुष्य की चतुर्मुखी उन्नति में सहायक हो। वे सामाजिक सुधार के लिए केवल पुरानी रूढ़ियों को तोड़ना पर्याप्त नहीं मानते थे। उनका मानना था कि रचनात्मक कार्य से ही यह संभव हो सकता है। संगोठी में डॉ. अनीता रानी, रश्मि, शिवांशी शर्मा, पवन कुमार, निशा रानी, जितेंद्र, डॉ. राजपाल सिंह, मिरनाल दहिया आदि उपस्थित रहे।

57. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 118th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer Mahashya Bhikhu Lal 22.01.2022 and delivered an expert lecture on "Contribution of Mahashya Bhikhu Lal: Establishment of Egalitarian Society".

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 22-01-2022

118वीं जयंती • क्षेत्र में फैली असमानता और अंधविश्वास को भी खत्म करने की मुहिम चलाई थी भीखू ने

स्वतंत्रता संग्राम के योद्धा भीखू लाल के संघर्ष को सलाम

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक महाशय भीखू लाल के 118वीं जयंती पर ऑनलाइन राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि महाशय भीखू लाल आधुनिक समतामूलक भारत के निर्माताओं में से एक थे जिन्होंने सामाजिक समानता के लिए और धार्मिक अंधविश्वासों को समाप्त करने के लिए आजीवन संघर्ष किया। वे एक ऐसे गुमनाम योद्धा थे जिन्होंने जमीनी स्तर पर बड़े बदलाव किए और जिसका असर पूरे इलाके में दिखाई पड़ता है। महाशय भीखूलाल का जन्म 21 जनवरी 1904 को अजूहा, उत्तर प्रदेश में हुआ था और बचपन से ही उन्होंने धार्मिक अंधविश्वासों का जोरदार खंडन अपने घर से ही किया सर्वप्रथम उन्होंने तुला दान का विरोध किया और और गाजी मियां की चौकी की और मूर्ति पूजा का विरोध किया। इसका प्रभाव से इस क्षेत्र में तुलादान और गाजी मियां की चौकी की पूजा इत्यादि की पुनरावृति देखने को नहीं मिलती है।

इसके साथ ही उन्होंने पितृ तर्पण का विरोध करते हुए इसका विरोध किया। तत्कालीन समय में ग्रामीण जीवन में राष्ट्रीयता के विकास और आजादी के लिए संघर्ष में गांधी पुस्तकालयों ने बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और महाशय भीखू लाल भी निरंतर इन पुस्तकालयों में जाकर आजादी के संघर्ष में शामिल होने लगे। 1920 के असहयोग आंदोलन के दौरान अजूहा में और आसपास के इलाकों में महाशय भीखू लाल के नेतृत्व में धरना प्रदर्शन हुए और इन्होने अपने गांव में ही रामस्वरूप कलार के नशा, अफीम इत्यादि को पकड़वा कर सबके सामने राष्ट्रीयता की भावना का उदाहरण प्रस्तुत किया।

सामाजिक सुधार के मार्ग पर इन्होने तत्कालीन समय की बड़ी बुराइयों रात बसना, बेगारी, मदिरा, मांस भक्षण इत्यादि को कुप्रथाओं को बंद करवाने में अदम्य साहस का परिचय दिया।

सेमिनार के अध्यक्ष और प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत भारत के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों और समाज सुधारकों में से एक महाशय भीखूलाल का नाम सर्वदा अमर रहेगा जिन्होंने त्याग और बलिदान के माध्यम से भारत में समतामूलक एवं तार्किक समाज की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पराक्षाए आनलाइन कराइ जाए। इस दौरान बामला, विकास कालारामण, विक्रम मौजूद रह। संवाद

समारोह बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय की ओर से स्वतंत्रता सेनानी भीखूलाल की जयंती पर किया ऑनलाइन राष्ट्रीय सेमिनार

स्वतंत्रता सेनानी भीखूलाल ने की समतामूलक समाज की स्थापना

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक महाशय भीखूलाल की 118 वीं जयंती के अवसर पर ऑनलाइन राष्ट्रीय सेमिनार किया गया। सेमिनार के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि महाशय भीखूलाल आधुनिक समतामूलक भारत के निर्माताओं में से एक थे। उन्होंने सामाजिक समानता और धार्मिक अंधविश्वासों को समाप्त करने के लिए

ऑनलाइन सेमिनार में विचार रखते हुए डॉ.अमरदीप सिंह। संवाद

आजीवन संघर्ष किया। वे एक ऐसे गुमनाम योद्धा थे जिन्होंने जमीनी स्तर पर बड़े बदलाव किए और जिसका असर पूरे इलाके में दिखाई पड़ता है।

महाशय भीखूलाल का जन्म 21 जनवरी 1904 को अजूहा, उत्तर प्रदेश में हुआ था और बचपन से ही उन्होंने धार्मिक अंधविश्वासों का जोरदार खंडन अपने घर से ही किया सर्वप्रथम उन्होंने तुला दान का विरोध किया। मूर्ति पूजा का विरोध किया। उन्होंने पितृ तर्पण का भी विरोध किया। उन्होंने राष्ट्रीयता के विकास और आजादी के लिए संघर्ष में गांधी पुस्तकालयों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । 1920 के असहयोग आंदोलन के दौरान अजूहा और आसपास के इलाकों में महाशय भीखू लाल के नेतृत्व में नशा मुक्ति अभियान चलाया गया।

उन्होंने स्वामी अछुतानंद द्वारा 1922 में आदि हिंदू आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया और अछूत समुदाय के सामाजिक, आर्थिक उत्थान एवं राजनीतिक अधिकारों के लिए संघर्ष किया। 1931 में गोलमेज सम्मेलन के दौरान गांधी और आंबेडकर के अछूतों के प्रतिनिधि होने पर प्रश्न उठने पर भीखूलाल ने गांव गांव जाकर डॉ. आंबेडकर के पक्ष में टेलीग्राम लिखने के लिए लोगों को प्रेरित किया।

डॉ. अमरदीप ने बताया कि महाशय भीखूलाल ने अपने घर में पुस्तकालय स्थापित करके शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाई। 1966 में भीखूलाल के पुत्र गुरुप्रसाद मदन ने अपने क्षेत्र में प्रथम स्नातक की डिग्री पूरी करने के बाद महाशय भीखू लाल ने उनसे वचन लिया कि वह कभी सरकारी नौकरी नहीं करेगा।

सेमिनार के अध्यक्ष एवं महाविद्यालय के प्राचार्य राज कुमार वर्मा ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत भारत के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों और समाज सुधारकों में से एक महाशय भिखूलाल का नाम सर्वदा अमर रहेगा जिन्होंने त्याग और बलिदान के माध्यम से भारत में समतामूलक एवं तार्किक समाज की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। वे हमेशा याद किए जाएंगे।

अमर उजाला, चरखी दादरी, हरि 22.1.22

View All Pages Page 4 of 5

दैनिक जागरण झज्जर

को किश्तों की राशि जारी भी कर दी

22.1.22

स्वतंत्रता सेनानी भीखू लाल की जयंती पर आनलाइन सेमिनार

साल्हावास : राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग के तत्वाधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक महाशय भीखू लाल के 118 वें जयंती कार्यक्रम के अवसर पर एक आनलाइन राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि महाशय भीखू लाल आधुनिक समतामूलक भारत के निर्माताओं में से एक थे। जिन्होंने सामाजिक समानता के लिए और धार्मिक अंधविश्वासों को समाप्त करने के लिए आजीवन संघर्ष किया। सामाजिक सुधार के मार्ग पर इन्होंने तत्कालीन समय की बड़ी बुराइयों रात बसना, बेगारी, मदिरा, मांस भक्षण इत्यादि कुप्रथाओं को बंद करवाने में अदम्य साहस का परिचय दिया। सेमिनार के अध्यक्ष और महाविद्यालय के प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत भारत के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों और समाज सुधारकों में से एक महाशय भीखू लाल का नाम सर्वदा अमर रहेगा। जिन्होंने त्याग और बलिदान के माध्यम से भारत में समतामूलक एवं तार्किक समाज की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 22-01-2022

महाशय भीखू लाल आधुनिक समतामूलक भारत के निर्माताओं में से एक

साल्हावास | आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक महाशय भीखू लाल के 118वें जयंती के अवसर पर एक ऑनलाइन राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि महाशय भीखू लाल आधुनिक समतामूलक भारत के निर्माताओं में से एक थे जिन्होंने सामाजिक समानता के लिए और धार्मिक अंधविश्वासों को समाप्त करने के लिए आजीवन संघर्ष किया। डॉ. अमरदीप ने बताया कि महाशय भीखूलाल ने अपने घर में पुस्तकालय स्थापित करके शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाई और भारतभर से दलित पुस्तिकाएं और समाचार पत्रों का सब्सक्रिप्शन करके अपने लाइब्रेरी में मंगवाया। इस सेमिनार के अध्यक्ष और महाविद्यालय के प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि आजादी के अमृत महाशय भीखूलाल का नाम सर्वदा अमर रहेगा।

महाशय भीखूलाल ने जमीनी स्तर पर किए बड़े बदलाव

चरखी दादरी : बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग की ओर से एक आनलाइन राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया ।इसमें महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक महाशय भीखू लाल के 118वीं जयंती पर उन्हें याद किया गया ।संयोजक और मुख्य वक्ता डा . अमरदीप ने कहा कि महाशय भीखू लाल आधुनिक समतामूलक भारत के निर्माताओं में से एक थे । उन्होंने जमीनी स्तर पर बड़े बदलाव किए ।(जास)

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 22.1.22

58. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 125th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Netaji Subhas Chandra Bose on 24.01.2022 and delivered an expert lecture on "Netaji Subhas Chandra Bose: Forgotten Hero of Freedom Struggle".

भारत की जीवटता और विराटता के प्रतीक हैं नेताजी : अमरदीप

चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में नेताजी सुभाषचंद्र बोस की 125वीं जयंती के उपलक्ष्य में आनलाइन सेमीनार का आयोजन हुआ। सेमीनार के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि नेताजी भारत की जीवटता और विराटता के प्रतीक हैं। आजादी का असली मूल्य क्या होता है यह हमें नेताजी के जीवन एवं संघर्ष से पता चलता है। इस दौरान रोहन, हिमांशु झा, डा. अनिता रानी, रश्मि, निशा रानी, शिवांशी शर्मा, जितेंद्र, सवीन, डा. अजय कुमार, मिरनाल दहिया, डा. शीतू सिंह, डा. राजपाल सिंह उपस्थित रहे। (**जासं**)

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 25.1.22

59. Dr. Aamrdeep participated in Flag Hosting ceremony on the occasion of 73rd Republic Day i.e. 26.01.2022 and delivered an expert lecture on "Importance of Independence: A Struggle from 1857 to 1947". He also organized a cultural programme on this auspicious occasion.

अमर उजाला, चरखी दादरी 28.01.2022

न्यूज डायरी

बिरोहड़ कॉलेज में मनाया गणतंत्र दिवस

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में 73 वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान लागू होने पर भारत को पूर्ण गणतंत्र घोषित किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष और महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा, डॉ. अमरदीप ने चतुर्थ श्रेणी के सभी कर्मचारियों को गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में सम्मानित किया। संवाद

60. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Online Seminar on 157th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Lala Lajpat Rai on 28.01.2022 and delivered keynote address on "Sher-e-Punjab: Lala Lajpat Rai and Freedom Struggle".

Youth & Women

my city

चरखी दादरी

अमर उजाला, चरखी दादरी 29.1.2022

लाला लाजपतराय का रोहतक और हिसार से था जुड़ाव

लाला लाजपतराय की जयंती पर बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय की ओर से किया ऑनलाइन सेमिनार, जिलेभर में हुए कार्यक्रम

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी नेता एवं पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की 157वीं जयंती पर ऑनलाइन सेमिनार किया गया। सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप सिंह रहे। उन्होंने कहा कि शेर-ए-पंजाब लाल लाजपतराय देश को आजाद कराने के लिए अंग्रेजों की लाठी खाकर भी पीछे नहीं हटे और प्राणों की आहुति देकर देशवासियों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

उन्होंने बताया कि लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी, 1865 को पंजाब के फिरोजपुर में हुआ था। उन्होंने कुछ समय हरियाणा के रोहतक और हिसार शहरों में वकालत की। लाला लाजपत राय स्वावलंबन से स्वराज्य लाना चाहते थे। 1905 में बंगाल का विभाजन करने पर तो लाला लाजपत राय ने सुरेंद्रनाथ बनर्जी और बिपिनचंद्र पाल जैसे आंदोलनकारियों से हाथ मिला लिया और इस तिकड़ी ने ब्रिटिश शासन की नाक में दम कर दिया। इस तिकड़ी ने स्वतंत्रता समर में वो नए प्रयोग किए थे जो उस समय में अपने आप में नायाब थे। लाल-बाल-पाल के नेतृत्व को पूरे देश में भारी जनसमर्थन मिल रहा था, जिसने अंग्रेजों की रातों की नींद हराम कर दी। इन्होंने अपनी मुहिम के तहत ब्रिटेन में तैयार हुए सामान का बहिष्कार और व्यावसायिक संस्थाओं में हड़ताल के माध्यम से ब्रिटिश सरकार का विरोध किया।

महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि साइमन कमीशन के खिलाफ साइमन वापस जाओ के नारों के साथ 1928 को लाहौर में एक विरोध प्रदर्शन के दौरान ब्रिटिश सरकार ने प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज कर दिया। लाठियां खाकर भी लालाजी डरे नहीं, बल्कि अंग्रेजों का जमकर सामना किया। इस लाठीचार्ज में लालाजी बुरी तरह घायल हो गए, जिसके बाद उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा और आखिरकार 17 नवंबर 1928 को इस वीर ने हमेशा के लिए आंखें मूंद ली। सेमिनार में डॉ. अनीता रानी, रश्मि, निशा रानी, शिवांशी शर्मा, जितेंद्र, सलीन, डॉ. अजय कुमार, मिरनाल दहिया, डॉ. मितू सिंह व राजपाल सिंह आदि उपस्थित रहे।

लाला लाजपतराय की वाणी और कलम में थी तेजस्विता

चरखी दादरी। आवाल सभा की ओर से शुक्रवार को लाजपत राय की 157वीं जयंती श्रद्धापूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि नगर पार्षद एवं हरियाणा प्रदेश वैश्य सम्मेलन के जिला अध्यक्ष रविंद्र सिंह गुप्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता लघु उद्योग भारती के जिला प्रधान एवं एमएलआर आयुर्वेदिक कॉलेज के प्रधान हरिराम खुडानिया ने की।

नगर के लाला लाजपत राय चौक पर लाला जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। तत्पश्चात दिल्ली रोड बाईपास स्थित श्रीकृष्ण गोशाला में सवामणी व अनाथ आश्रम में आश्रितों को प्रसाद वितरण किया गया। विष्णु कुमार ने कहा कि लाजपत राय की कलम आग उगलती थी और उनकी वाणी क्रांति उत्पन्न कर देती थी। उनकी कलम और वाणी दोनों में तेजस्विता की अद्भुत किरणें थीं। भारत भूमि हमेशा से ही वीरों की जननी रही है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में ऐसे कई वीर शहीद हुए, जिन्होंने देश को आजादी दिलाने में अपनी जान की

लाजपतराय जयंती पर श्रीकृष्ण गोशाला में सवामणी लगाते लोग। संवाद

भी परवाह नहीं की। ऐसे ही वीर शेर-ए-पंजाब लाला लाजपत राय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानी थे, जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। लालाजी ने पंजाब नेशनल बैंक व लक्ष्मी बीमा कंपनी की स्थापना की। ये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में गरम दल के प्रमुख तीन नेता लाल-बाल-पाल में से एक थे। उन्होंने भारत में साइमन कमीशन आगमन पर विरोध प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में विष्णु कुमार बिरड़ी, ईश्वरचंद अधिवक्ता, अर्जुन लाल बजाज, रविंद्र सिलगर, कृष्ण कुमार मकड़ानिया, प्रदीप, पवन गुप्ता, राजकुमार गोयल, विनय कानेजर, मितेश कांहेरिया, विनोद गर्ग, राधे श्याम, पवन दिल्लीवान, सुनील गर्ग, लक्ष्मीचंद, शिवचरण, सतीश बजाज, राजेश गुप्ता, भारत भूषण, मुकेश बंसल, सुनील गर्ग, राकेश गुप्ता, डॉ. एमके जैन, डॉ. श्रीपत वर्मा, सुभाष गुप्ता, रजत ऐरन, अनुराग गुप्ता, प्रमोद गुप्ता, बाबूराम, शिव कुमार व नरेश मित्तल उपस्थित थे। संवाद

चरखी दादरी भास्कर 29-01-2022

लाल-बाल-पाल के नेतृत्व को पूरे देश में मिला जनसमर्थन

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय पंजाब केसरी लाला लाजपत राय की 157वीं जयंती पर ऑनलाइन सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक डॉ. अमरदीप शेर-ए-पंजाब लाला लाजपत राय ने देश को आजाद कराने के लिए अंग्रेजों की लाठी खाकर भी नहीं हटे पीछे बल्कि प्राणों की आहुति देकर देशवासियों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी, 1865 को फिरोजपुर, पंजाब में हुआ था। इन्होंने कुछ समय हरियाणा के रोहतक और हिसार शहरों में वकालत की। लाला लाजपत राय स्वावलंबन से स्वराज्य लाना चाहते थे।

1905 में बंगाल का विभाजन किया गया था तो लाला लाजपत राय ने सुरेंद्रनाथ बनर्जी और विपिनचंद्र पाल जैसे आंदोलनकारियों से हाथ मिला लिया और इस तिकड़ी ने ब्रिटिश शासन की नाक में दम कर दिया। इस तिकड़ी ने स्वतंत्रता समर में वो नए प्रयोग किए थे जो उस समय में अपने-आप में नायाब थे। लाल-बाल-पाल के नेतृत्व को पूरे देश में जनसमर्थन मिल रहा था, जिसने अंग्रेजों की रातों की नींद उड़ा दी थी।

बिरोहड़ कॉलेज में ऑनलाइन सेमिनार का आयोजन

सालहावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में क्रांतिकारी नेता एवं पंजाब केसरी लाला लाजपत राय की जयंती के अंतर्गत ऑनलाइन सेमिनार का आयोजन किया गया। इसके संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि शेर-ए-पंजाब लाला लाजपत राय ने देश को आजाद कराने के लिए अंग्रेजों की लाठी खाकर भी पीछे नहीं हटे। सेमिनार के अध्यक्ष और महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि साइमन कमीशन के खिलाफ साइमन गो बैक (साइमन वापस जाओ) के नारों के साथ 1928 को लाहौर में विरोध प्रदर्शन के दौरान ब्रिटिश सरकार ने प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज कर दिया। लाठियां खाकर भी लालाजी ने डरे नहीं, बल्कि अंग्रेजों का सामना किया। इस लाठीचार्ज में लालाजी घायल हो गए, जिसके बाद उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा और आखिरकार 17 नवंबर 1928 को इस वीर ने हमेशा के लिए आंखे मूंद ली। सेमिनार में डॉ.अनीता रानी, रश्मि, निशा रानी, शिवांशी शर्मा, जितेंद्र, सवीन, डॉ. अजय कुमार, मिरनाल दहिया, डॉ. सितु सिंह, डॉ राजपाल सिंह इत्यादि उपस्थित रहे। संवाद

अमर उजाला, झज्जर 29.1.22

61. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 113rd Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Revolutionary Suhashini Ganguli on 03.02.2022 and delivered keynote address on “Revolutionary Movement in India and Role of Suhashini Ganguli”.

दैनिक भास्कर

चरखी दादरी भास्कर 04-02-2022

सुहासिनी गांगुली एक ऐसी गुमनाम नायिका थीं जिन्होंने आजादी की खातिर सर्वस्व न्यौछावर कर दिया: डॉ. अमरदीप

चरखी दादरी| गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी सुहासिनी गांगुली की 113वीं जयंती पर सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि क्रांतिकारियों की 'दीदी' नाम से प्रसिद्ध सुहासिनी गांगुली एक ऐसी गुमनाम नायिका थीं जिन्होंने देश की आजादी की खातिर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। सुहासिनी गांगुली का जन्म 1909 में खुलना, बांग्लादेश में हुआ था। प्रारंभ में कोलकारी रसिक लाल दास से मिलकर क्रांतिकारी संगठन जुगांतर पार्टी से जुड़ी। सुहासिनी का घर क्रांतिकारियों के लिए उसी तरह से पनाह का ठिकाना बन गया था, जैसे ता के एक मूक बधिर बच्चों के स्कूल में अध्यापिका के रूप में कार्य किया और 1924 में क्रांतिकारियों के शहर कोलकाता आने से उनकी जिंदगी का मकसद केवल भारत की आज़ादी ही बन गया। अंग्रेजी हुकूमत को हराने के लिए क्रांतिकालंदन में भीखाजी कामा का घर कभी वीर सावरकर के लिए था। हेमंत तरफदार, गणेश घोष, जीवन घोषाल, लोकनाथ बल जैसे तमाम क्रांतिकारियों को समय समय पर पुलिस से बचने के लिए उनकी शरण लेनी पड़ी थी। सुहासिनी ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और इसी कारण उनको गिरफ्तार करके 1942 में जेल भेज दिया गया, जहां से 1945 में इन्हें रिहा किया गया। 1965 में एक दुर्घटना में घायल होने पर इनका निधन हो गया था।

अमर उजाला, झज्जर 4.2.22

क्रांतिकारी सुहासिनी गांगुली की 113 वीं जयंती मनाई

झज्जर। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में क्रांतिकारी सुहासिनी गांगुली की 113 वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर आयोजित सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि क्रांतिकारियों की दीदी के नाम से प्रसिद्ध सुहासिनी गांगुली एक ऐसी गुमनाम नायिका थी। उन्होंने देश की आजादी की खातिर सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। सुहासिनी गांगुली का जन्म खुलना, बांग्लादेश में हुआ था।

प्रारंभ में कोलकाता के एक मूक बधिर बच्चों के स्कूल में अध्यापिका के रूप में कार्य किया और 1924 में क्रांतिकारियों के शहर कोलकाता आने से उनकी जिंदगी का मकसद केवल भारत की आजादी ही बन गया। अंग्रेजी हुकूमत को हराने के लिए क्रांतिकारी रसिक लाल दास से मिलकर क्रांतिकारी संगठन जुगांतर पार्टी से जुड़ी। सुहासिनी का घर क्रांतिकारियों के लिए उसी तरह से पनाह का ठिकाना बन गया था। सुहासिनी ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और इसी कारण उनको गिरफ्तार करके 1942 में जेल भेज दिया गया। संवाद